27 सूरए अन नम्ल

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 1

आयत का अनुवाद: "ता सीन ये कुरआन वाज़ेए व रौशन किताब की आयतें हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **प्रमाण (Pramana)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कुरआन को एक स्पष्ट और वाज़े किताब के रूप में प्रस्तुत करती है।**
- **हेतु (Reason): यह दावा किया गया है कि कुरआन स्पष्ट और रौशन है, लेकिन यह केवल एक कथन है, बिना इस बात के प्रमाण के कि क्या वास्तव में यह किताब हर किसी के लिए स्पष्ट है या नहीं।**
- **उदाहरण (Example): भारत के विभिन्न दर्शन शास्त्रों में, जैसे कि वेदों, गीता, और उपनिषदों में भी गहरे और सूक्ष्म अर्थ होते हैं। कई बार उन गहन अर्थों को समझने में विशेषज्ञों को भी कठिनाई होती है। कुरआन के संदर्भ में भी यही बात लागू हो सकती है। यदि कुरआन सचमुच स्पष्ट और रौशन है, तो इसे समझने में कोई विशेष शिक्षा या प्रतीकात्मक अर्थों की आवश्यकता क्यों होती है?**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत केवल कुरआन को स्पष्ट और रौशन बताती है, लेकिन यह तर्क के बिना कोई प्रमाण नहीं देती। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी दावे को प्रमाण के बिना नहीं माना जा सकता।**

आयत 2

आयत का अनुवाद: "यह उन ईमानदारों के लिए हिदायत और जन्नत की खुशखबरी है।"

चुना गया न्याय तत्वः

- **प्रमेय (Prameya)**

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत ईमानदारों के लिए हिदायत और स्वर्ग की खुशी का दावा करती है।**
- **हेतु (Reason): यह दावा इस बात पर आधारित है कि ईमानदारी स्वर्ग का द्वार खोलती है, लेकिन क्या यह दावा सार्वभौमिक सत्य है? क्या अन्य धार्मिक और दर्शन शास्त्रों में भी इस प्रकार का स्वर्ग का विचार है?**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन के अनुसार, व्यक्ति का आत्मा पुनर्जन्म के चक्र से गुजरता है और उसकी मर्जी, कर्मों और ज्ञान से उन्नति करता है। गीता में भी कर्मों का फल समान रूप से मिलता है, लेकिन यहाँ स्वर्ग का आश्वासन दिया गया है जो अन्य धर्मों में नहीं मिलता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत केवल मुस्लिम विश्वास पर आधारित है, और इसका दावा सभी मानवता के लिए सार्वभौमिक नहीं है। यह विचार अन्य धार्मिक और दर्शन शास्त्रों से मेल नहीं खाता।**

आयत 3

आयत का अनुवादः "जो नमाज़ को पाबन्दी से अदा करते हैं और ज़कात दिया करते हैं और यही लोग आख़िरत (क़यामत) का भी यक़ीन रखते हैं।"

चुना गया न्याय तत्वः

- **व्याप्ति (Vyapti)**

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि नमाज़, ज़कात और आख़िरत पर विश्वास करने वाले लोग हिदायत और स्वर्ग के हकदार होते हैं।**

- **हेतु (Reason):** यह आयत कहती है कि यह गुण निश्चित रूप से ईमानदारी और स्वर्ग का मार्ग हैं, लेकिन क्या यह तर्क सार्वभौमिक रूप से हर व्यक्ति के लिए लागू होता है?
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से गीता में, कर्म, ध्यान, और ज्ञान के माध्यम से आत्मा की उन्नति को प्राथमिकता दी जाती है। यह आयत कर्मों के बजाय एक निश्चित धार्मिक आचारों को ज़्यादा महत्वपूर्ण मानती है, जबकि अन्य दर्शन शास्त्रों में यह बेमानी हो सकता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत दूसरे धर्मों और दर्शन शास्त्रों के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती, और इसे सार्वभौमिक रूप से लागू करना कठिन है।

आयत 4

आयत का अनुवाद: "इसमें शक नहीं कि जो लोग आखिरत पर इमान नहीं रखते (गोया) हमने ख़ुद (उनकी कारस्तानियों को उनकी नज़र में) अच्छा कर दिखाया है।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **हेतु (Hetu)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि जो लोग आख़िरत पर विश्वास नहीं करते, उनके कर्मों को अच्छा दिखाया गया है।
- **हेतु (Reason):** यह तर्क इस पर आधारित है कि ईश्वर ने नास्तिकों को भ्रमित किया है, जो एक पक्षपाती और अनैतिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। न्याय दर्शन में यह सिद्धांत गलत है, क्योंकि एक निष्पक्ष ईश्वर या सत्ता का आकलन करते समय पक्षपात की कोई जगह नहीं होनी चाहिए।
- **उदाहरण (Example):** गीता में यह कहा गया है कि भगवान सभी के प्रति समान होता है, चाहे कोई भक्त हो या न हो (गीता 9.22)। यहाँ पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण अपनाया गया है, जो न्याय के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत पक्षपाती दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।

आयत 5

आयत का अनुवाद: "तो ये लोग भटकते फिरते हैं- यही वह लोग हैं जिनके लिए (क़यामत में) बड़ा अज़ाब है और यही लोग आख़िरत में सबसे ज़्यादा घाटा उठाने वाले हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **प्रमाण (Pramana)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि जो लोग आख़िरत पर विश्वास नहीं करते, वे बड़े घाटे में हैं और उनका अंत बुरा होगा।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क नास्तिकता को खारिज करता है, लेकिन इसका कोई तर्कसंगत या प्रमाणिक आधार नहीं है। यह केवल विश्वास पर आधारित है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन के अनुसार, कर्म और आत्मा की यात्रा का कोई भी निश्चित अंत नहीं होता, बल्कि यह व्यक्ति की आंतरिक स्थिति और कार्यों पर निर्भर करता है। इस दृष्टिकोण में कोई स्थायी और निश्चित घाटा या पुरस्कार नहीं होता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना किसी प्रमाण के एक निश्चित भविष्यवाणी करती है, जो तर्कसंगत और न्यायपूर्ण नहीं है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
1	**प्रमाण**	**कुरआन की स्पष्टता का दावा बिना प्रमाण के है।**
2	**प्रमेय**	**ईमानदारी और स्वर्ग के सिद्धांत का दावा विशेष रूप से मुस्लिम विश्वास पर आधारित है।**

3	**व्याप्ति**	**स्वर्ग के लिए निश्चित आचार को अन्य धर्मों में लागू करना मुश्किल है।**
4	**हेतू**	**पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण, जो न्याय दर्शन के खिलाफ है।**
5	**प्रमाण**	**बिना प्रमाण के निश्चित घाटे और पुरस्कार का दावा किया गया है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कई तार्किक और प्रमाणिक खामियां हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, इन आयतों में किए गए दावे अधिकतर बिना प्रमाण, पक्षपातपूर्ण और सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 6

आयत का अनुवाद: "और (ऐ रसूल) तुमको तो कुरआन एक बड़े वाक़िफकार हकीम की बारगाह से अता किया जाता है।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **प्रमेय (Prameya)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि कुरआन को एक बड़े वाक़िफकार (जानकार) हकीम की बारगाह से दिया गया है।**
- **हेतु (Reason): यह दावा करता है कि कुरआन एक परमज्ञानी और परमसत्य के रूप में माना जाता है, लेकिन क्या यह वास्तव में प्रमाणिक है? क्या कुरआन का ज्ञान अन्य स्रोतों से भी संभव था?**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, ज्ञान को केवल एक ईश्वर या किसी विशेष स्रोत से जोड़ने के बजाय आत्मज्ञान और विवेक से प्राप्त किया जाता है। यही कारण है कि केवल कुरआन को एक विशेष स्रोत से जोड़ना तर्कसंगत नहीं है, जब कि अन्य संस्कृत साहित्य और ज्ञान के स्रोत भी हैं।**

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत कुरआन को एक विशेष और सर्वोत्तम ज्ञान का स्रोत मानती है, लेकिन यह दृष्टिकोण अन्य स्रोतों से ज्ञान प्राप्त करने के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

आयत 7

आयत का अनुवाद: "(वह वाक़िया याद दिलाओ) जब मूसा ने अपने लड़के बालों से कहा कि मैने (अपनी बायीं तरफ) आग देखी है (एक ज़रा ठहरो तो) मै वहाँ से कुछ (राह की) ख़बर लाँऊ या तुम्हें एक सुलगता हुआ आग का अँगारा ला दूँ ताकि तुम तापो।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **हेतु (Hetu)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत मूसा द्वारा आग के दर्शन के बाद अपने साथियों से आग लाने का प्रस्ताव करने का वर्णन करती है।
- **हेतु (Reason):** यह आयत यह बताती है कि मूसा ने आग के दर्शन के बाद अपने साथियों से आग लाने का प्रस्ताव किया। क्या यह व्यवहार तर्कसंगत है कि केवल आग देखकर किसी स्थान पर जाकर आग लाने की आवश्यकता महसूस हुई?
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, हर घटना का तात्त्विक अर्थ और उद्देश्य होता है, जैसे कि गीता में कर्मों के परिणाम और उद्देश्य पर चर्चा की गई है। एक साधारण आग का उद्देश्य केवल तापना नहीं होता, बल्कि उससे उत्पन्न होने वाले लाभ और उद्देश्य को समझना होता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत मूसा के विचारों का संकेत देती है, लेकिन यह तर्कसंगत नहीं है कि केवल आग देखकर किसी कार्य को करने का निर्णय लिया जाए। इसे एक भौतिक घटना के रूप में समझने की आवश्यकता है।

आयत 8

आयत का अनुवाद: ”ग़रज़ जब मूसा इस आग के पास आए तो उनको आवाज़ आयी कि मुबारक है वह जो आग में (तजल्ली दिखाना) है और जो उसके गिर्द है और वह ख़ुदा सारे जहाँ का पालने वाला है।”

चुना गया न्याय तत्व:

- **प्रमाण (Pramana)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि मूसा ने आग के पास पहुंचकर एक आवाज़ सुनी, जिसमें परमेश्वर ने खुद को ”सारे जहाँ का पालने वाला” कहा।**

- **हेतु (Reason): यह घटना एक अलौकिक अनुभव को दर्शाती है, लेकिन क्या यह वास्तव में प्रमाणिक है? क्या यह घटना वास्तविक रूप में घटित हुई थी, या यह केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण का हिस्सा है?**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, कई बार ऐसे अनुभवों को रूपक या प्रतीकात्मक रूप में लिया जाता है। उपनिषदों में आत्मज्ञान की प्राप्ति को अंशकालिक सत्य के रूप में दिखाया गया है, न कि बाहरी घटनाओं के रूप में।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक अलौकिक घटना का बयान करती है, लेकिन इसका प्रमाण नहीं है, और इसे वास्तविकता के रूप में स्वीकार करना तर्कसंगत नहीं है।**

आयत 9

आयत का अनुवाद: ”(हर ऐब से) पाक व पाकीज़ा है- ऐ मूसा इसमें शक नहीं कि मै ज़बरदस्त हिकमत वाला हूँ।”

चुना गया न्याय तत्व:

- **प्रमाण (Pramana)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि परमेश्वर हर ऐब से पाक है और वह अत्यंत हिकमत वाला है।**

- **हेतु (Reason): यह दावा किया गया है कि परमेश्वर हर प्रकार से शुद्ध है और उसकी सत्ता में कोई दोष नहीं है। क्या यह वास्तविकता के सिद्धांतों से मेल खाता है? क्या यह परिकल्पना तार्किक दृष्टि से सही है?**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, परमात्मा को शुद्ध और दोषमुक्त माना जाता है, लेकिन वह अक्सर कर्मों और उनके परिणामों के अनुसार कार्य करता है। शुद्धता केवल अभिव्यक्ति की बात नहीं है, बल्कि न्याय और सत्य के संदर्भ में भी देखी जाती है।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत परमेश्वर की शुद्धता और ज्ञान को स्पष्ट करती है, लेकिन इसे केवल एक विश्वास के रूप में लिया जा सकता है, और इसका वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।**

आयत 10

आयत का अनुवाद: "और (हाँ) अपनी छड़ी तो (ज़मीन पर) डाल दो तो जब मूसा ने उसको देखा कि वह इस तरह लहरा रही है गोया वह जिन्दा अज़दहा है तो पिछले पावँ भाग चले और पीछे मुड़कर भी न देखा (तो हमने कहा) ऐ मूसा डरो नहीं हमारे पास पैग़म्बर लोग डरा नहीं करते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **हेतु (Hetu)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि जब मूसा ने अपनी छड़ी को ज़मीन पर डाला, तो वह एक जिंदा अजदहा की तरह लहराई, और मूसा ने डरकर भाग लिया।**

- **हेतु (Reason): यह घटना एक अलौकिक चमत्कार को दर्शाती है, लेकिन क्या यह तर्कसंगत है कि केवल छड़ी के गिराने से ऐसी भयंकर घटना घट सकती है? क्या यह केवल विश्वास का हिस्सा है, या इसे वास्तविकता के रूप में लिया जाना चाहिए?**

- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, ऐसे चमत्कारी घटनाओं को रूपक या प्रतीक के रूप में लिया जाता है, जैसे कि महाभारत में भगवान श्री कृष्ण के अद्भुत कार्य। इन कार्यों का उद्देश्य केवल शिक्षाओं को समझाना होता है, न कि वास्तविक घटनाओं के रूप में स्वीकार करना।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत एक अलौकिक घटना को दर्शाती है, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं है, और इसे केवल विश्वास के रूप में लिया जा सकता है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
6	प्रमेय	कुरआन को एक विशेष स्रोत से जोड़ने का दृष्टिकोण तर्कसंगत नहीं है।
7	हेतू	आग को देखने के बाद आग लाने का निर्णय तर्कसंगत नहीं है।
8	प्रमाण	अलौकिक घटनाओं का प्रमाण नहीं है और इसे केवल विश्वास के रूप में लिया जा सकता है।
9	प्रमाण	परमेश्वर की शुद्धता का दावा केवल विश्वास पर आधारित है।
10	हेतू	छड़ी को गिराने से चमत्कारी घटना घटना केवल विश्वास के रूप में लिया जा सकता है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में वर्णित घटनाओं और ज्ञान को एक अलौकिक और विश्वास आधारित दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। हालांकि, न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, बिना प्रमाण और तर्क के इन घटनाओं को स्वीकार करना तर्कसंगत नहीं है। इन घटनाओं को केवल विश्वास के रूप में लिया जा सकता है, लेकिन उन्हें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से साबित नहीं किया जा सकता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 11

आयत का अनुवाद: "मगर जो शख़्स गुनाह करे फिर गुनाह के बाद उसे नेकी (तौबा) से बदल दे तो अलबत्ता बड़ा बख्शने वाला मेहरबान हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **हेतु (Hetu)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि जो व्यक्ति गुनाह करे और फिर तौबा कर ले, उसे परमेश्वर द्वारा बख्शा जाएगा, क्योंकि वह बड़ा मेहरबान और बख्शने वाला है।**
- **हेतु (Reason): यह दावा करता है कि परमेश्वर गुनाहों को माफ करने वाला है, लेकिन क्या यह तर्कसंगत है कि गुनाह के पश्चात एक व्यक्ति को केवल पश्चाताप करने से बख्शा जा सकता है? क्या यह नैतिक दृष्टि से सही है कि केवल पश्चाताप से किसी व्यक्ति के कृत्य की सजा को समाप्त किया जा सकता है?**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, जैसे गीता में कर्म और उसके परिणाम पर बल दिया गया है। यहां कर्मों के परिणाम को कर्मों के अनुसार भुगतना आवश्यक माना गया है, न कि केवल पश्चाताप के माध्यम से उसे मिटाया जा सकता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक विश्वास को व्यक्त करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती। कर्मों के परिणामों को केवल तौबा से माफ करना तर्कसंगत नहीं है।**

आयत 12

आयत का अनुवाद: "(वहाँ) और अपना हाथ अपने गरेबा में तो डालो कि वह सफेद बुर्राक़ होकर बेऐब निकल आएगा (ये वह मौजिज़े) मिन जुमला नौ मोजिज़ात के हैं जो तुमको मिलेगें तुम फिरऔन और उसकी क़ौम के पास जाओ क्योंकि वह बदकिरदार लोग हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **प्रमेय (Prameya)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि मूसा को एक चमत्कारी शक्ति दी गई थी, जिसमें उनका हाथ सफेद बुर्राक़ होकर बेऐब निकल आता था। यह एक परमेश्वर द्वारा दिए गए नौ चमत्कारी संकेतों में से एक था, जो उसे फिरऔन और उसकी क़ौम के पास भेजने के लिए था।**
- **हेतु (Reason): यह आयत चमत्कारी घटनाओं पर आधारित है, लेकिन क्या यह घटनाएं प्रमाणिक हैं? क्या इस प्रकार की अलौकिक घटनाओं को वास्तविकता माना जा सकता है?**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, चमत्कारों को सामान्यत: रूपक या प्रतीकात्मक रूप में लिया जाता है। जैसे कि रामायण और महाभारत में भगवान के चमत्कारी कृत्य होते हैं, परंतु वे केवल शिक्षाएँ देने के लिए होते हैं, न कि वास्तविक घटनाओं के रूप में।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक अलौकिक घटना का बयान करती है, जिसका प्रमाण नहीं है और यह केवल एक विश्वास पर आधारित है। न्याय दर्शन के अनुसार, बिना प्रमाण के ऐसे घटनाओं को स्वीकार नहीं किया जा सकता।**

आयत 13

आयत का अनुवाद: "तो जब उनके पास हमारे आँखें खोल देने वाले मोजिज़े आए तो कहने लगे ये तो खुला हुआ जादू है।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **प्रमाण (Pramana)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि जब फिरऔन और उसकी क़ौम ने मोजिज़े देखे, तो उन्होंने उन्हें खुले तौर पर जादू कहा।**
- **हेतु (Reason): यह दावा करता है कि फिरऔन और उसकी क़ौम ने मोजिज़ों को जादू माना, लेकिन क्या यह सच है कि मोजिज़े केवल भ्रम और जादू के रूप में ही देखे जा सकते हैं? क्या मोजिज़े या अलौकिक घटनाओं के लिए यह तर्क सही है?**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, जब कोई अद्भुत घटना घटती है, तो उसे समझाने के लिए सामान्यत: तर्क और विवेक का उपयोग किया जाता है। चमत्कारी घटनाओं को किसी प्रकार के उच्च उद्देश्य के रूप में समझा जाता है, न कि केवल भ्रम के रूप में।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत दर्शाती है कि फिरऔन और उसकी क़ौम ने मोजिज़ों को जादू कहा, लेकिन बिना प्रमाण के ऐसी घटनाओं को सिर्फ जादू के रूप में मानना सही नहीं है।**

आयत 14

आयत का अनुवाद: "और बावजूद के उनके दिल को उन मोजिज़ात का यक़ीन था मगर फिर भी उन लोगों ने सरकशी और तकब्बुर से उनको न माना तो (ऐ रसूल) देखो कि (आख़िर) मुफसिदों का अन्जाम क्या होगा।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **व्याप्ति (Vyapti)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि फिरऔन और उसकी क़ौम ने मोजिज़ों को जानने के बावजूद उन्हें नकारा, और उनका अंजाम बुरा हुआ।**
- **हेतु (Reason): यह दावा करता है कि किसी के दिल में सच्चाई का विश्वास होने के बावजूद वह उसे नकार सकता है। क्या यह व्यवहार तर्कसंगत है? क्या किसी व्यक्ति के दिल में विश्वास होने के**

बावजूद वह किसी साक्ष्य को नकार सकता है?

- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, जैसे उपनिषदों में, सत्य और ज्ञान का मार्ग आत्मज्ञान से जाता है, न कि बाहरी प्रमाणों से। इसका मतलब है कि जब किसी के भीतर सत्य का आभास हो, तो उसे स्वीकार करना चाहिए।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत यह दर्शाती है कि फिरऔन और उसकी क़ौम ने सच्चाई का नकार किया, जो कि तार्किक दृष्टि से गलत है। न्याय दर्शन के अनुसार, यह व्यवहार तर्कसंगत नहीं है।

आयत 15

आयत का अनुवाद: "और इसमें शक नहीं कि हमने दाऊद और सुलेमान को इल्म अता किया और दोनों ने (ख़ुश होकर) कहा ख़ुदा का शुक्र जिसने हमको अपने बहुतेरे ईमानदार बन्दों पर फज़ीलत दी।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **प्रमेय (Prameya)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि दाऊद और सुलेमान को परमेश्वर ने ज्ञान (इल्म) दिया और उन्होंने उसके आभार में शुक्र अदा किया।
- **हेतु (Reason):** यह दावा करता है कि परमेश्वर ने दाऊद और सुलेमान को विशेष ज्ञान दिया, लेकिन क्या यह ज्ञान अन्य साधनों से भी प्राप्त हो सकता था, या यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण से माना जाता है?
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, ज्ञान का स्रोत केवल बाहरी ईश्वर या शक्ति से नहीं, बल्कि आत्मज्ञान और तपस्या से भी माना जाता है। इसलिए यह दावा कि ज्ञान केवल ईश्वर से आता है, संकीर्ण दृष्टिकोण है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत विशेष रूप से ईश्वर से ज्ञान के मिलने का दावा करती है, जो न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से सामान्य ज्ञान और विवेक से नहीं मेल खाता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
11	हेतू	गुनाह के पश्चात तौबा से माफी को न्याय संगत नहीं माना जा सकता।
12	प्रमेय	मोजिज़ों को केवल विश्वास पर आधारित घटनाएं मानना उचित नहीं है।
13	प्रमाण	मोजिज़ों को केवल जादू कहकर नकारना तर्कसंगत नहीं है।
14	व्याप्ति	दिल में विश्वास होने के बावजूद सत्य को नकारना तर्कसंगत नहीं है।
15	प्रमेय	ज्ञान को केवल ईश्वर से जोड़ना अन्य स्रोतों से ज्ञान प्राप्ति के विचार से मेल नहीं खाता।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कुरआन के कुछ कथनों को धर्म और विश्वास के आधार पर प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इन घटनाओं और विचारों का न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता। बिना प्रमाण और तर्क के अलौकिक घटनाओं और ज्ञान को स्वीकार करना तार्किक दृष्टि से चुनौतीपूर्ण है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 16

आयत का अनुवाद: "और (इल्म हिकमत जाएदाद (मनकूला) ग़ैर मनकूला सब में) सुलेमान दाऊद के वारिस हुए और कहा कि लोग हमको (ख़ुदा के फज़ल से) परिन्दों की बोली भी सिखायी गयी है और हमें (दुनिया की) हर चीज़ अता की गयी है इसमें शक नहीं कि ये यक़ीनी (ख़ुदा का) सरीही फज़ल व करम है।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **प्रमेय (Prameya)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि सुलेमान को परिन्दों की बोली समझने का ज्ञान प्राप्त था, जो एक दिव्य कृपा के रूप में उन्हें दी गई थी।
- **हेतु (Reason):** यहां सवाल उठता है कि क्या वास्तव में परिन्दों की बोली समझने का ज्ञान किसी इंसान को दिया जा सकता है? क्या यह घटना केवल एक धार्मिक विश्वास है, या इसमें कोई वैज्ञानिक प्रमाण है?
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, ज्ञान का स्रोत आत्मज्ञान और अनुभूति होता है, न कि बाहरी दुनिया से किसी चमत्कारी शक्ति का हस्तक्षेप। जैसे कि भगवद गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन को योग और ध्यान के माध्यम से आत्मज्ञान की प्राप्ति का मार्ग दिखाया, न कि किसी भौतिक या अलौकिक घटना से।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत धार्मिक विश्वास पर आधारित है, लेकिन इसका तर्कसंगत प्रमाण नहीं है कि कोई व्यक्ति परिन्दों की बोली समझ सकता है। इसे केवल विश्वास के रूप में लिया जा सकता है।

आयत 17

आयत का अनुवाद: "और सुलेमान के सामने उनके लशकर जिन्नात और आदमी और परिन्दे सब जमा किए जाते थे।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **हेतु (Hetu)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि सुलेमान के पास एक बड़ा लश्कर था, जिसमें जिन्न, आदमी और परिन्दे सब शामिल थे।
- **हेतु (Reason):** यह बात उठती है कि क्या यह वाकई संभव है कि जिन्न, परिन्दे और इंसान एक साथ मिलकर एक लश्कर बनाते हों? क्या यह केवल प्रतीकात्मक है, या इसका वास्तविकता से कोई संबंध है?

- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, शक्ति और ज्ञान का सृजन प्राकृतिक तत्वों से किया जाता है, और सभी जीवों की अपनी भूमिका होती है। महाभारत और अन्य संस्कृत ग्रंथों में, देवता और असुरों के संघर्ष को रूपक के रूप में लिया गया है, जो आंतरिक संघर्षों और विचारों का प्रतिनिधित्व करता है।

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत एक अलौकिक लश्कर का वर्णन करती है, लेकिन इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है। इसे केवल विश्वास के रूप में लिया जा सकता है और इसका तर्कसंगत विश्लेषण नहीं किया जा सकता।

आयत 18

आयत का अनुवाद: "तो वह सबके सब (मसल मसल) खड़े किए जाते थे (ग़रज़ इस तरह लशकर चलता) यहाँ तक कि जब (एक दिन) चीटीयों के मैदान में आ निकले तो एक चीटीं बोली ऐ चीटीयों अपने अपने बिल में घुस जाओ- ऐसा न हो कि सुलेमान और उनका लशकर तुम्हे रौंद डाले और उन्हें उसकी ख़बर भी न हो।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **उपमाना (Upamana)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि एक चींटी ने अपने साथी चींटियों को चेतावनी दी कि सुलेमान और उनके लश्कर के आने से पहले वे अपने बिलों में घुस जाएं।

- **हेतु (Reason):** क्या यह सचमुच संभव है कि चींटी इतनी समझदार हो, जो किसी बड़े लश्कर के आने से पहले चेतावनी दे सके? क्या यह केवल रूपक के रूप में लिया जाना चाहिए?

- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, प्रकृति के हर घटक को एक रूपक के रूप में देखा जाता है, जैसे कि वेदों में पृथ्वी, जल, अग्नि आदि को देवताओं के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यहां पर भी चींटी की चेतावनी एक रूपक हो सकती है, न कि एक वास्तविक घटना।

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत एक रूपक प्रतीक का उपयोग करती है, जो केवल चेतावनी और प्रकृति की समझ को दर्शाती है। इसे तर्कसंगत दृष्टिकोण से वास्तविक घटना के रूप में नहीं लिया

जा सकता।

आयत 19

आयत का अनुवाद: "तो सुलेमान इस बात से मुस्कुरा के हँस पड़े और अर्ज़ की परवरदिगार मुझे तौफीक़ अता फरमा कि जैसी जैसी नेअमतें तूने मुझ पर और मेरे वालदैन पर नाज़िल फरमाई हैं मै (उनका) शुक्रिया अदा करुँ और मैं ऐसे नेक काम करुँ जिसे तू पसन्द फ़रमाए और तू अपनी ख़ास मेहरबानी से मुझे (अपने) नेकोकार बन्दों में दाखिल कर।"

चुना गया न्याय तत्व:

- प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत सुलेमान के द्वारा भगवान से उन नेमतों का आभार व्यक्त करने का दृश्य प्रस्तुत करती है, जो उन्हें दी गई हैं।
- हेतु (Reason): यह बात की जाती है कि सुलेमान ने भगवान से शुकर अदा किया, लेकिन क्या यह केवल एक आंतरिक भावना और धार्मिक कृतज्ञता का परिणाम है, या इस घटना को कोई वास्तविक भौतिक प्रमाण है?
- उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, आभार और कृतज्ञता को आत्मज्ञान और साधना का हिस्सा माना जाता है। श्री कृष्ण गीता में अर्जुन से कहते हैं कि अपनी इच्छाओं को त्यागकर और कर्मों में अपनी कर्तव्यनिष्ठा को दृढ़ करके शुकर अदा करें।
- निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक दृष्टिकोण से आभार और कृतज्ञता को दर्शाती है, लेकिन इसका भौतिक प्रमाण नहीं है और इसे केवल विश्वास के रूप में लिया जाना चाहिए।

आयत 20

आयत का अनुवाद: **"और सुलेमान ने परिन्दों (के लशकर) की हाज़िरी ली तो कहने लगे कि क्या बात है कि मै हुदहुद को (उसकी जगह पर) नहीं देखता क्या (वाक़ई में) वह कहीं ग़ायब है।"**

चुना गया न्याय तत्व:

- **हेतु (Hetu)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत सुलेमान द्वारा हुदहुद (तोता) की अनुपस्थिति पर चिंता करने का वर्णन करती है।
- **हेतु (Reason):** यह ध्यान आकर्षित करता है कि क्या वास्तव में सुलेमान ने एक परिन्दे के बारे में इतनी गहरी चिंता की? क्या यह सिर्फ एक रूपक था या इसे एक वास्तविक घटना के रूप में देखा जा सकता है?
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, किसी भी जीव का स्थान या अनुपस्थिति सामान्यत: प्रकृति के तत्वों का संकेत होती है, और इसे गहरी प्रतीकात्मकता के रूप में समझा जाता है, न कि वास्तविक भौतिक घटनाओं के रूप में।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत एक रूपक और प्रतीक के रूप में सुलेमान की चिंता को दर्शाती है, और इसे वास्तविक घटना के रूप में स्वीकार करना तर्कसंगत नहीं है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
16	प्रमेय	परिन्दों की बोली को समझने का ज्ञान अलौकिक प्रतीत होता है, और इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।
17	हेतू	जिन्न, परिन्दे और इंसान का एक साथ लश्कर बनाना अलौकिक है, इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

18	**उपमाना**	**चींटी का बोलना एक रूपक प्रतीक है, और इसे वास्तविक घटना के रूप में नहीं लिया जा सकता।**
19	**प्रमाण**	**आभार और कृतज्ञता धार्मिक दृष्टिकोण हैं, इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
20	**हेतू**	**परिन्दे की अनुपस्थिति पर सुलेमान की चिंता रूपक प्रतीक है, और इसे वास्तविक घटना के रूप में नहीं लिया जा सकता।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में वर्णित घटनाएं और ज्ञान अधिकतर धार्मिक विश्वास पर आधारित हैं, जिनका भौतिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। ये कथाएं रूपक, प्रतीक या धार्मिक दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत की जा सकती हैं, लेकिन इन्हें वास्तविक घटनाओं के रूप में स्वीकार करना तर्कसंगत नहीं है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 21

आयत का अनुवाद: "(अगर ऐसा है तो) मैं उसे सख़्त से सख़्त सज़ा दूँगा या (नहीं तो) उसे ज़बाह ही कर डालूँगा या वह (अपनी बेगुनाही की) कोई साफ़ दलील मेरे पास पेश करे।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **हेतु (Hetu)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत सुलेमान द्वारा हुदहुद की अनुपस्थिति पर सख्त सजा देने की धमकी को दर्शाती है।**
- **हेतु (Reason): यहां यह सवाल उठता है कि क्या इस तरह की सख्ती और सजा का तर्कसंगत आधार है? क्या किसी की अनुपस्थिति को सजा देने का तरीका सही और न्यायपूर्ण है?**
- **उदाहरण (Example): भारतीय न्याय में, सजा का आधार केवल दोषी होने पर होता है, और सजा देने के लिए उचित कारण और प्रमाण आवश्यक होते हैं। जैसे कि वेदों में भी दोषी व्यक्ति को**

उपयुक्त दंड देने की प्रक्रिया बताई गई है, लेकिन यह केवल तथ्यों और प्रमाणों पर आधारित होता है।

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत किसी के अपराध या अनुपस्थिति के आधार पर सजा की धमकी देती है, लेकिन बिना किसी ठोस प्रमाण के यह एक तर्कसंगत दलील नहीं मानी जा सकती।

आयत 22

आयत का अनुवाद: "ग़रज़ सुलेमान ने थोड़ी ही देर (तवक्कुफ़) किया था कि (हुदहुद) आ गया, तो उसने अर्ज़ की, मुझे यह बात मालूम हुई है जो अब तक हुज़ूर को भी मालूम नहीं है और आप के पास शहरे सबा से एक तहक़ीकी ख़बर लेकर आया हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **प्रमाण (Pramana)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत हुदहुद (तोता) के ज्ञान और उसकी यात्रा की बात करती है, जिसमें वह सुलेमान को शहरे सबा (सबैया) से एक ख़बर लाकर बताता है।

- **हेतु (Reason):** यह सवाल उठता है कि क्या एक पक्षी, जैसे हुदहुद, वास्तव में किसी जगह से इतनी महत्वपूर्ण और गुप्त जानकारी लाकर दे सकता है? क्या इसका कोई भौतिक या वैज्ञानिक प्रमाण है?

- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, ज्ञान का स्रोत आत्मज्ञान और अनुभूति होता है, और जीवों का ज्ञान सीमित होता है। गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा है कि ज्ञान एक आंतरिक प्रक्रिया है, न कि किसी बाहरी स्त्रोत से प्राप्त किया जा सकता।

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत हुदहुद के ज्ञान को अलौकिक मानती है, लेकिन इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है। यह केवल धार्मिक विश्वास के रूप में लिया जा सकता है।

आयत 23

आयत का अनुवाद: "मैंने एक औरत को देखा जो वहाँ के लोगों पर सलतनत करती है और उसे (दुनिया की) हर चीज़ अता की गयी है और उसका एक बड़ा तख़्त है।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **प्रमेय (Prameya)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत सुलेमान द्वारा एक शक्तिशाली महिला शासक के बारे में बताती है, जो शहरे सबा की सलतनत करती है और उसे सब कुछ दिया गया है।**
- **हेतु (Reason): यह सवाल उठता है कि क्या यह जानकारी केवल एक रूपक या प्रतीकात्मक है, या वास्तव में कोई शासक था जो इतना शक्तिशाली था? क्या इसके पीछे कोई ऐतिहासिक प्रमाण है?**
- **उदाहरण (Example): भारतीय इतिहास और दर्शन में, शासन और सत्ता का विश्लेषण अक्सर प्रतीकात्मक रूप में किया जाता है, जैसे कि महाभारत में दुर्योधन और पांडवों के बीच सत्ता संघर्ष को रूपक के रूप में प्रस्तुत किया गया था।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत शासक महिला को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है कि शहरे सबा में एक ऐसी महिला शासक थी। इसे धार्मिक विश्वास के रूप में लिया जाना चाहिए।**

आयत 24

आयत का अनुवाद: "मैंने खुद मलका को देखा और उसकी क़ौम को देखा कि वह लोग ख़ुदा को छोड़कर आफ़ताब को सजदा करते हैं शैतान ने उनकी करतूतों को (उनकी नज़र में) अच्छा कर दिखाया है और उनको राहे रास्त से रोक रखा है।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **प्रमेय (Prameya)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत शहरे सबा की शासिका और उसके क़ौम के सूर्य पूजा को दर्शाती है।
- **हेतु (Reason):** यहां सवाल उठता है कि क्या यह सूर्य पूजा का विवरण वास्तविक है, या यह एक प्रतीकात्मक घटना है, जिसे धार्मिक संदर्भ में पेश किया गया है?
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, सूर्य को आत्मज्ञान और ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है, लेकिन सूर्य पूजा का वास्तविक प्रमाण नहीं मिलता। यह केवल एक प्रतीकात्मक विचार हो सकता है, जैसा कि वेदों में सूर्य देवता के बारे में बताया गया है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत एक प्रतीकात्मक रूप में शासिका की क़ौम के सूर्य पूजा को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसे वास्तविक घटना के रूप में प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 25

आयत का अनुवाद: "तो उन्हें (इतनी सी बात भी नहीं सूझती) कि वह लोग ख़ुदा ही का सजदा क्यों नहीं करते जो आसमान और ज़मीन की पोशीदा बातों को ज़ाहिर कर देता है और तुम लोग जो कुछ छिपाकर या ज़ाहिर करके करते हो सब जानता है।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **हेतु (Hetu)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत कहती है कि लोग सूर्य की पूजा कर रहे हैं, जबकि उन्हें केवल अल्लाह का सजदा करना चाहिए, क्योंकि वह सब कुछ जानता है।
- **हेतु (Reason):** यह सवाल उठता है कि क्या यह सही है कि कोई एक परम शक्ति ही सब कुछ जानने का दावा करती है, और क्या यह सभी धर्मों और विश्वासों में समान रूप से लागू होता है?
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, परम सत्य को ब्रह्म के रूप में माना जाता है, जो सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है। लेकिन यह भी कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति का अपना मार्ग होता है, और जो आस्था और विश्वास के साथ कार्य करता है, वह सही मार्ग पर होता है।

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह सभी मानवता के लिए सार्वभौमिक सत्य नहीं हो सकता है। इसे धार्मिक विश्वास के रूप में लिया जाना चाहिए, न कि तर्कसंगत प्रमाण के रूप में।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
21	हेतू	अनुपस्थिति को सजा देने का तरीका तर्कसंगत नहीं है, बिना प्रमाण के सजा देना न्यायपूर्ण नहीं है।
22	प्रमाण	हुदहुद द्वारा दी गई जानकारी का कोई भौतिक प्रमाण नहीं है, यह एक धार्मिक विश्वास है।
23	प्रमेय	शासक महिला का वर्णन ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित नहीं है, इसे धार्मिक विश्वास के रूप में लिया जाना चाहिए।
24	प्रमेय	सूर्य पूजा का वर्णन प्रतीकात्मक हो सकता है, इसका ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है।
25	हेतू	अल्लाह का सर्वज्ञ होना सभी विश्वासों में समान रूप से लागू नहीं हो सकता।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में दी गई घटनाएं और ज्ञान अधिकतर धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं, जिनका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है। इन कथाओं को रूपक, प्रतीक या विश्वास के रूप में लिया जा सकता है, लेकिन इन्हें वास्तविक घटनाओं के रूप में स्वीकार करना तर्कसंगत नहीं है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 26

आयत का अनुवाद: "अल्लाह वह है जिससे सिवा कोई माबूद नहीं, वही (इतने) बड़े अर्श का मालिक है (सजदा)।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **प्रमाण (Pramana)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत यह दावा करती है कि केवल अल्लाह ही माबूद (पूज्य) है और उसका अर्श (सिंहासन) बड़ा है।
- **हेतु (Reason):** यह आयत एक दैवीय सत्ता की श्रेष्ठता को स्वीकार करती है, लेकिन क्या यह विचार अन्य धार्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोणों से तर्कसंगत है? क्या इस दावे का कोई भौतिक या तात्त्विक प्रमाण है?
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, ब्रह्म को सर्वोच्च सत्ता माना जाता है, लेकिन यह कहा जाता है कि ब्रह्म सर्वव्यापक और निर्गुण है, न कि किसी विशेष सत्ता के रूप में साकार। जैसे वेदांत में यह कहा गया है कि "अहम् ब्रह्मास्मि" (मैं ही ब्रह्म हूँ)।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत अल्लाह को सर्वोच्च सत्ता मानती है, लेकिन यह दृष्टिकोण व्यक्तिगत विश्वासों और धर्मों पर निर्भर करता है, और इसका भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 27

आयत का अनुवाद: "ग़रज़, सुलेमान ने कहा हम अभी देखते हैं कि तूने सच-सच कहा या तू झूठा है।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **हेतु (Hetu)**

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत सुलेमान द्वारा हुदहुद के कथन की सत्यता की जांच करने की बात करती है।
- हेतु (Reason): यह सवाल उठता है कि सुलेमान को यह सत्य जानने के लिए किसी अन्य स्रोत की आवश्यकता क्यों थी? क्या यह स्वीकार्य है कि एक राजा या नेता को किसी के कथन की सत्यता पर संदेह करना चाहिए, जब वह खुद सर्वज्ञ नहीं है?
- उदाहरण (Example): भारतीय न्याय में, सत्य की जांच का एक न्यायपूर्ण तरीका होता है, जहां प्रत्येक पक्ष को प्रमाण प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है। लेकिन यहां सुलेमान का संदेह बिना किसी ठोस कारण के किया जा रहा है।
- निगमन (Conclusion): यह आयत एक व्यक्तिगत संदेह को दर्शाती है, जो बिना किसी ठोस प्रमाण के किया गया है। यह दार्शनिक दृष्टिकोण से सही नहीं माना जा सकता, क्योंकि सत्य का निर्धारण बिना तर्क और प्रमाण के नहीं किया जा सकता।

आयत 28

आयत का अनुवाद: "अच्छा, हमारा ये ख़त लेकर जा और उसको उन लोगों के सामने डाल दे, फिर उनके पास से जाना, फिर देखते रहना कि वह लोग आखिर क्या जवाब देते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

- प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत सुलेमान के आदेश को दर्शाती है, जिसमें वह हुदहुद को एक पत्र देने का निर्देश देते हैं, जिसे वह शहरे सबा के शासक तक पहुंचाए।
- हेतु (Reason): यह सवाल उठता है कि क्या इस प्रकार के संवाद और पत्र व्यवहार को एक सार्वभौमिक सत्य के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है? क्या इसके पीछे कोई भौतिक प्रमाण है?
- उदाहरण (Example): भारतीय न्याय में, किसी भी संवाद या शासक के आदेश का प्रमाण होना आवश्यक होता है। लेकिन यहां यह केवल एक धार्मिक संदर्भ में दिया गया आदेश है, जिसका कोई

ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है।

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत केवल धार्मिक विश्वासों के तहत एक संवाद को प्रस्तुत करती है, और इसका कोई भौतिक या ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है।

आयत 29

आयत का अनुवाद: "हुदहुद ने मलका के पास ख़त पहुँचाया, तो मलका बोली, ऐ (मेरे दरबार के) सरदारों, ये एक वाजिबुल एहतराम ख़त मेरे पास डाल दिया गया है।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **हेतु (Hetu)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत हुदहुद द्वारा भेजे गए पत्र को दर्शाती है, जिसे मलका (रानी) अपने दरबार के लोगों को दिखाती है।
- **हेतु (Reason):** यह सवाल उठता है कि एक पक्षी (हुदहुद) पत्र कैसे लिख सकता है और एक जिंदा व्यक्ति (मलका) उसे समझ सकता है? क्या यह घटना तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्वीकार्य है?
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, इस तरह की घटनाओं को रूपक या प्रतीकात्मक रूप में लिया जाता है। जैसे कि महाभारत में विभिन्न पात्रों की संवाद क्षमता और उनकी शक्तियाँ प्रतीकात्मक होती हैं।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत अलौकिक और असंभव घटनाओं को प्रस्तुत करती है, जिसे केवल विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण के रूप में लिया जा सकता है।

आयत 30

आयत का अनुवाद: "सुलेमान की तरफ से है (ये उसका सरनामा), है बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।"

चुना गया न्याय तत्वः

- **हेतु (Hetu)**

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत सुलेमान के पत्र की शुरुआत को दर्शाती है, जिसमें वह बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम का उच्चारण करते हैं।**
- **हेतु (Reason): यह सवाल उठता है कि क्या बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम को केवल एक धार्मिक उद्घोषणा माना जाना चाहिए, या क्या इसका कोई भौतिक और प्रमाणिक सत्य भी है?**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, धार्मिक उद्घोषणाओं का महत्व होता है, लेकिन यह भी कहा जाता है कि वास्तविकता केवल भौतिक और तात्त्विक प्रमाणों से ही समझी जा सकती है। जैसे गीता में कहा गया है कि कर्म के बिना कोई भी व्यक्ति आध्यात्मिक उन्नति नहीं कर सकता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक धार्मिक उद्घोषणा को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका तात्त्विक और भौतिक प्रमाण नहीं है। यह केवल एक विश्वास का हिस्सा है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
26	**प्रमाण**	**अल्लाह को सर्वोच्च सत्ता मानना एक व्यक्तिगत विश्वास है, इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**
27	**हेतू**	**सुलेमान का संदेह बिना किसी ठोस कारण के किया गया है, यह एक न्यायपूर्ण तरीका नहीं है।**
28	**प्रमाण**	**पत्र के माध्यम से संवाद का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है, यह एक धार्मिक विश्वास है।**
29	**हेतू**	**हुदहुद द्वारा भेजे गए पत्र और मलका की प्रतिक्रिया को एक धार्मिक विश्वास**

		के रूप में लिया जा सकता है।
30	**हेतू**	**बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम को धार्मिक उद्घोषणा माना जा सकता है, इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत घटनाएँ और संवाद धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं, जिनका कोई भौतिक या ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है। ये कथाएँ रूपक या प्रतीकात्मक रूप में ली जा सकती हैं, लेकिन इन्हें वास्तविक घटनाओं के रूप में स्वीकार करना तर्कसंगत नहीं है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 31

आयत का अनुवाद: "यह है कि मुझ से सरकशी न करो और मेरे सामने फरमाबरदार बन कर हाज़िर हो।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **हेतु (Hetu)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत सुलेमान की हुक्म की अवज्ञा के खिलाफ चेतावनी देती है, जिसमें वह यह कहते हैं कि "मुझसे सरकशी न करो" और फरमाबरदारी का आदेश देते हैं।**
- **हेतु (Reason): यह सवाल उठता है कि क्या हुक्म देना और आदेश मानना हमेशा सही और तर्कसंगत होता है? क्या एक शासक को यह अधिकार होता है कि वह अपने आदेश के पालन की अनिवार्यता पर जोर दे, बिना यह देखे कि उस आदेश की वैधता और तर्क क्या है?**
- **उदाहरण (Example): भारतीय न्याय में, शासक के आदेश की वैधता और न्याय का मूल्यांकन होता है। जैसे कर्तव्य और अधिकारों का संतुलन रखने की कोशिश की जाती है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत केवल शासक और जनता के बीच के रिश्ते को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह परखने के लिए कोई तर्क नहीं देती कि यह आदेश क्यों उचित है।**

आयत 32

आयत का अनुवाद: "तब मलका (बिलक़ीस) बोली, ऐ मेरे दरबार के सरदारों, तुम मेरे इस मामले में मुझे राय दो (क्योंकि मेरा तो ये क़ायदा है कि) जब तक तुम लोग मेरे सामने मौजूद न हो (मशवरा न दे दो) मैं किसी अम्र में क़तई फैसला न किया करती।"

चुना गया न्याय तत्वः

- **हेतु (Hetu)**

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत मलका (बिलक़ीस) के निर्णय लेने की प्रक्रिया को दर्शाती है, जिसमें वह अपने दरबार के सरदारों से सलाह मांगती हैं।**
- **हेतु (Reason): यह सवाल उठता है कि क्या एक शासक को अपने निर्णय के लिए केवल अपने दरबारियों पर निर्भर रहना चाहिए, और क्या यह एक उचित और तर्कसंगत तरीका है? क्या यह निर्णय प्रक्रिया सही है कि बिना सभी पक्षों को सुने कोई निर्णय न लिया जाए?**
- **उदाहरण (Example): भारतीय न्याय प्रणाली में, निर्णय लेने से पहले हर पक्ष को सुनने का प्रावधान होता है। यह एक निष्पक्ष और न्यायपूर्ण प्रक्रिया को सुनिश्चित करता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक शासक के सलाह लेने की प्रक्रिया को दर्शाती है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं करती कि क्या यह प्रक्रिया सभी परिस्थितियों में तर्कसंगत है, क्योंकि कभी-कभी अकेले निर्णय भी आवश्यक होते हैं।**

आयत 33

आयत का अनुवाद: "उन लोगों ने अर्ज़ की, हम बड़े ज़ोरावर, बड़े लड़ने वाले हैं और (आइन्दा) हर अम्र का आप को एख़्तियार है तो जो हुक्म दे, आप खुद अच्छी तरह इसके अंजाम पर गौर कर लें।"

चुना गया न्याय तत्वः

- **प्रमाण (Pramana)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत उस सलाह को प्रस्तुत करती है, जिसमें मलका के दरबार के लोग उसे सलाह देते हैं कि वह अपने फैसलों पर पुनर्विचार करें, क्योंकि उनके पास ताकत और सैन्य बल है।**
- **हेतु (Reason): यह सवाल उठता है कि क्या सैन्य बल का उपयोग हमेशा सही होता है? क्या केवल शारीरिक ताकत से फैसलों की वैधता या न्याय तय किया जा सकता है?**
- **उदाहरण (Example): भारतीय न्याय में, शक्ति का दुरुपयोग नहीं किया जा सकता। जैसे कि न्यायिक प्रणाली में न्याय का निर्धारण केवल कानून और प्रमाणों पर आधारित होता है, न कि ताकत के आधार पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत शक्ति और बल के आधार पर निर्णय लेने का विचार प्रस्तुत करती है, जो न्यायिक दृष्टिकोण से उचित नहीं है क्योंकि न्याय का मूल्यांकन ताकत नहीं, बल्कि प्रमाण और तर्क द्वारा होना चाहिए।**

आयत 34

आयत का अनुवाद: "मलका ने कहा, बादशाहों का क़ायदा है कि जब किसी बस्ती में (बज़ोरे फ़तेह) दाख़िल हो जाते हैं तो उसको उजाड़ देते हैं और वहाँ के मुअजिज़ लोगों को ज़लील व रुसवा कर देते हैं और ये लोग भी ऐसा ही करेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **हेतु (Hetu)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत शासक के विचार को प्रस्तुत करती है, जिसमें वह यह मानती हैं कि अन्य शासक उनके राज्य में घुसने पर उसे उजाड़ देंगे और जनता को अपमानित करेंगे।**

- **हेतु (Reason):** यह सवाल उठता है कि क्या सभी शासकों की नीति एक जैसी होती है? क्या यह न्यायपूर्ण है कि किसी समूह के बारे में सामान्यीकृत और नकारात्मक सोच रखी जाए, बिना यह देखे कि हर शासक के पास अलग-अलग दृष्टिकोण हो सकता है?
- **उदाहरण (Example):** भारतीय न्याय में, किसी को भी बिना ठोस प्रमाण के दोषी नहीं ठहराया जा सकता। जैसे अपराधी को दोषी ठहराने से पहले हर पक्ष की बात सुनी जाती है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत सामान्यीकृत और नकारात्मक सोच को प्रस्तुत करती है, जो हर स्थिति में तर्कसंगत और न्यायपूर्ण नहीं हो सकती।

आयत 35

आयत का अनुवाद: "और मैं उनके पास (एलचियों की माअरफ़त कुछ तोहफा भेजकर देखती हूँ कि एलची लोग क्या जवाब लाते हैं) ग़रज़ जब बिलक़ीस का एलची (तोहफा लेकर) सुलेमान के पास आया।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **उपमान (Upamana)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत मलका के द्वारा सुलेमान के पास तोहफे भेजने की प्रक्रिया को दर्शाती है, जिसमें वह उसके प्रतिउत्तर को जानने का प्रयास करती हैं।
- **हेतु (Reason):** यह सवाल उठता है कि क्या यह नीति हमेशा एक तर्कसंगत और न्यायपूर्ण समाधान है, या यह केवल एक प्रतीकात्मक या राजनीतिक चाल है?
- **उदाहरण (Example):** भारतीय राजनीति में, तोहफे और राजनैतिक चालों को एक उपमान के रूप में लिया जा सकता है, लेकिन यह कभी-कभी मात्र दिखावा होता है और इसका कोई तात्त्विक या न्यायपूर्ण आधार नहीं होता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत एक राजनैतिक और प्रतीकात्मक प्रक्रिया को प्रस्तुत करती है, जो वास्तविकता में कभी भी तर्कसंगत या न्यायपूर्ण नहीं हो सकती।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
31	**हेतू**	**शासक का आदेश देना बिना किसी न्यायिक आधार के हमेशा उचित नहीं हो सकता।**
32	**हेतू**	**निर्णय लेने के लिए केवल सलाह पर निर्भर रहना हमेशा उचित नहीं है।**
33	**प्रमाण**	**शक्ति और बल के आधार पर निर्णय लेना न्यायपूर्ण नहीं है, केवल तर्क और प्रमाण से निर्णय होना चाहिए।**
34	**हेतू**	**सामान्यीकृत और नकारात्मक सोच बिना सबूत के अन्य शासकों पर न्यायपूर्ण नहीं हो सकती।**
35	**उपमान**	**तोहफे भेजना राजनैतिक चाल हो सकता है, लेकिन यह न्यायपूर्ण या तर्कसंगत प्रक्रिया नहीं है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत निर्णय लेने की प्रक्रियाएँ और शासकों की नीतियाँ न्यायपूर्ण नहीं दिखतीं, क्योंकि वे केवल शक्ति, सामान्यीकृत सोच, और प्रतीकात्मक चालों पर आधारित हैं। वास्तविक न्याय तर्क, प्रमाण, और निष्पक्षता पर आधारित होना चाहिए।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 36

आयत का अनुवाद: "तो सुलेमान ने कहा, क्या तुम लोग मुझे माल की मदद देते हो तो ख़ुदा ने जो (माल दुनिया) मुझे अता किया है वह (माल) उससे जो तुम्हें बख्शा है कहीं बेहतर है।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **प्रमेय (Prameya)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत सुलेमान द्वारा दिए गए मूल्य और उनके दृष्टिकोण को दर्शाती है, जिसमें वह दुनिया के माल और संपत्ति की तुलना करते हैं और इसे ईश्वर के दिए हुए आशीर्वाद से बेहतर मानते हैं।**
- **हेतु (Reason): यह सवाल उठता है कि क्या किसी शासक का दुनिया की संपत्ति से परे ईश्वर द्वारा दी गई संपत्ति को श्रेष्ठ मानना तर्कसंगत है? क्या यह न्यायपूर्ण है कि एक शासक अपनी संपत्ति की तुलना एक अन्य व्यक्ति की संपत्ति से करें, जबकि दोनों के पास विभिन्न परिस्थितियाँ और जिम्मेदारियाँ हो सकती हैं?**
- **उदाहरण (Example): भारतीय न्याय व्यवस्था में, संपत्ति का निर्धारण व्यक्तिगत श्रम, बुद्धिमत्ता और नैतिकता के आधार पर होता है, न कि केवल ईश्वर से प्राप्त किसी आशीर्वाद पर।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत संपत्ति और माल की तुलना में आत्मसम्मान और ईश्वर की कृपा का महत्व दर्शाती है, लेकिन यह यह नहीं बताती कि क्या यह दृष्टिकोण हर परिस्थिति में लागू होता है। यह एक व्यक्ति के दृष्टिकोण पर आधारित है, जो सभी के लिए समान नहीं हो सकता।**

आयत 37

आयत का अनुवाद: "फिर तोहफा लाने वाले ने कहा, तो उन्हीं लोगों के पास जा हम यक़ीनन ऐसे लशकर से उन पर चढ़ाई करेंगे जिसका उनसे मुक़ाबला न हो सकेगा और हम ज़रूर उन्हें वहाँ से ज़लील व रुसवा करके निकाल बाहर करेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **प्रमाण (Pramana)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत एक सैन्य आक्रमण के विचार को प्रस्तुत करती है, जिसमें तोहफा लाने वाला कहता है कि वह उन लोगों को हराकर उन्हें अपमानित कर बाहर निकालेंगे।**

- **हेतु (Reason):** यह सवाल उठता है कि क्या सैन्य बल का इस्तेमाल हमेशा न्यायपूर्ण और तर्कसंगत होता है? क्या केवल शक्ति के आधार पर किसी के अधिकारों को नष्ट करना उचित है?
- **उदाहरण (Example):** भारतीय संविधान में, किसी भी संघर्ष में हिंसा का प्रयोग केवल तभी किया जा सकता है जब अन्य सभी विकल्प समाप्त हो जाएं। बल का प्रयोग न्याय और मानवाधिकारों के उल्लंघन के रूप में नहीं किया जा सकता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत शक्ति के दुरुपयोग को प्रोत्साहित करती है, जो न्यायपूर्ण नहीं हो सकता। यह दिखाती है कि संघर्ष में ताकत का इस्तेमाल हमेशा समाधान नहीं हो सकता, बल्कि यह समस्या को और बढ़ा सकता है।

आयत 38

आयत का अनुवाद: "तो सुलेमान ने अपने एहले दरबार से कहा, ऐ मेरे दरबार के सरदारो तुममें से कौन ऐसा है कि क़ब्ल इसके वह लोग मेरे सामने फरमाबरदार बनकर आयें।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **उपमान (Upamana)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत सुलेमान के दरबारियों से उनके सामने फरमाबरदारी दिखाने के लिए एक चुनौती को प्रस्तुत करती है, जो शासक के आदेश का पालन करने की एक परंपरा को दर्शाती है।
- **हेतु (Reason):** यह सवाल उठता है कि क्या यह हमेशा उचित होता है कि एक शासक अपने आदेशों का पालन करने के लिए अन्य लोगों से अपेक्षाएँ रखे? क्या यह एक न्यायपूर्ण प्रक्रिया है?
- **उदाहरण (Example):** भारतीय न्याय व्यवस्था में, निष्पक्षता और स्वतंत्रता का आदान-प्रदान किया जाता है, जिसमें किसी को भी शासक के आदेश के प्रति क़ानूनी रूप से बाध्य नहीं किया जाता, बल्कि यह क़ानूनी और न्यायिक प्रक्रिया पर निर्भर करता है।

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत शासक की शक्ति और आदेश के पालन की उम्मीद को दर्शाती है, लेकिन यह न्याय और स्वतंत्रता की भावना के विपरीत है, क्योंकि न्यायिक दृष्टिकोण से आदेशों का पालन केवल कानून और तर्क के आधार पर होना चाहिए।

आयत 39

आयत का अनुवाद: "जिनों में से एक दियो बोल उठा कि क़ब्ल इसके कि हुज़ूर (दरबार बरख़ास्त करके) अपनी जगह से उठे मैं तख़्त आपके पास ले आऊँगा और यक़ीनन उस पर क़ाबू रखता हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **प्रमेय (Prameya)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत उस जिन के द्वारा सुलेमान से यह दावा प्रस्तुत करने को दर्शाती है कि वह तख़्त को तुरंत लाकर दिखाएगा।
- **हेतु (Reason):** यह सवाल उठता है कि क्या यह तर्कसंगत है कि एक जिन को इस कार्य में सशक्त माना जाए? क्या यह न्यायपूर्ण है कि जिन की शक्ति को एक शासक द्वारा प्रयोग किया जाए?
- **उदाहरण (Example):** भारतीय न्याय प्रणाली में किसी विशेष शक्ति का प्रयोग केवल प्रमाणित और तर्कसंगत आधारों पर किया जा सकता है। बिना प्रमाण और न्यायपूर्ण आधार के शक्ति का दुरुपयोग अनुचित होगा।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत शक्ति के दुरुपयोग की ओर इशारा करती है, जिसमें तर्क और न्याय से अधिक शक्तियों का प्रयोग किया गया है। यह न्यायिक दृष्टिकोण से उचित नहीं हो सकता।

आयत 40

आयत का अनुवाद: "तो जब सुलेमान ने उसे अपने पास मौजूद पाया तो कहने लगे ये महज़ मेरे परवरदिगार का फज़ल व करम है ताकि वह मेरा इम्तेहान ले कि मै उसका शुक्र करता हूँ या नाशुक्री करता हूँ और जो कोई

शुक्र करता है वह अपनी ही भलाई के लिए शुक्र करता है और जो शख़्स नाशुक्री करता है तो (याद रखिए) मेरा परवरदिगार यक़ीनन बेपरवा और सख़ी है।"

चुना गया न्याय तत्व:

- **हेतु (Hetu)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत ईश्वर की कृपा और परीक्षा के बारे में बात करती है, जिसमें सुलेमान इसे अपने परवरदिगार का फ़ज़्ल मानते हैं और यह समझते हैं कि यह उनकी परीक्षा है।**
- **हेतु (Reason): यह सवाल उठता है कि क्या ईश्वर की परीक्षा हमेशा न्यायपूर्ण होती है? क्या किसी को अपने कृत्यों के लिए ऐसे इम्तिहान देना उचित है, जहां निर्णय किसी बाहरी शक्ति के हाथ में होता है?**
- **उदाहरण (Example): भारतीय न्याय में, परीक्षा और न्याय का उद्देश्य हमेशा निष्पक्ष और तर्कसंगत होना चाहिए। किसी को केवल व्यक्तिगत कार्यों के आधार पर परखना, बिना उसे पूरे संदर्भ में समझे, उचित नहीं हो सकता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत ईश्वर की परीक्षा के विचार को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं करती कि क्या यह हमेशा न्यायपूर्ण है, क्योंकि कभी-कभी परीक्षा और न्याय दोनों का संतुलन होना चाहिए।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
36	**प्रमेय**	**संपत्ति की तुलना के आधार पर आदेश देना न्यायपूर्ण नहीं है, क्योंकि यह सभी परिस्थितियों में लागू नहीं हो सकता।**
37	**प्रमाण**	**शक्ति का दुरुपयोग हमेशा न्यायपूर्ण नहीं हो सकता; केवल तर्क और प्रमाण के आधार पर निर्णय होना चाहिए।**

38	उपमान	शासक का आदेश पालन करना स्वतंत्रता और निष्पक्षता के सिद्धांतों के खिलाफ हो सकता है।
39	प्रमेय	शक्ति का दुरुपयोग, जैसे जिनों का उपयोग, न्यायपूर्ण नहीं हो सकता।
40	हेतू	ईश्वर की परीक्षा और कृत्यों को परखना कभी-कभी न्यायपूर्ण नहीं हो सकता, क्योंकि इसे संदर्भ और परिस्थितियों में परखना आवश्यक है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत विचार शक्ति, आदेश और परीक्षा के संदर्भ में होते हैं, लेकिन ये न्याय और तर्क के दृष्टिकोण से पूरी तरह से उपयुक्त नहीं हैं। वास्तविक न्याय तर्क, प्रमाण, और निष्पक्षता पर आधारित होना चाहिए, न कि केवल शक्ति और आदेश के आधार पर।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना:

आयत 41

आयत का अनुवाद:
"फिर सुलेमान ने कहा कि उसके तख़्त में (उसकी अक़्ल के इम्तिहान के लिए) तग़ाय्युर तबददुल कर दो ताकि हम देखें कि फिर भी वह समझ रखती है या उन लोगों में है जो कुछ समझ नहीं रखते।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): सुलेमान ने तख़्त में बदलाव किया ताकि वह यह देख सके कि बिलक़ीस समझदार हैं या नहीं।**
- **हेतु (Reason): यहाँ पर यह तर्क दिया जा रहा है कि यह बदलाव (तग़ाय्युर तबददुल) केवल मानसिक क्षमता (अक़्ल) की परख करने के लिए किया गया था।**
- **उदाहरण (Example): इस प्रकार के अनुभव में, वास्तविक बदलाव का उद्देश्य केवल एक "परीक्षण" होता है, लेकिन यह कार्य केवल मानसिक रूप से संज्ञानात्मक परीक्षण के रूप में सामने आता है, जो केवल परखने के उद्देश्य से किया जाता है, न कि एक तात्त्विक या विज्ञान सम्मत बदलाव।**

- **निगमन (Conclusion):** यह तर्क प्रामाणिक नहीं है, क्योंकि वास्तविक जीवन में मानसिक परख के लिए किसी भी वस्तु में बदलाव की आवश्यकता नहीं होती, यह केवल व्यक्तित्व के अंदर के दृष्टिकोण की परीक्षा हो सकती है, न कि बाहरी परिवर्तनों द्वारा।

आयत 42

आयत का अनुवाद:
"फिर जब बिलक़ीस (सुलेमान के पास) आयी तो पूछा गया कि तुम्हारा तख़्त भी ऐसा ही है वह बोली गोया ये वही है, फिर कहने लगी, हमको तो उससे पहले ही (आपकी नुबूवत) मालूम हो गयी थी और हम तो आपके फ़रमाबरदार थे ही।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** बिलक़ीस पहले ही सुलेमान की नुबूवत को पहचान चुकी थी।
- **हेतु (Reason):** बिलक़ीस का यह कथन बिना किसी प्रमाण या अनुभव के किया गया है, जो इस बात की पुष्टि करता है कि वह पहले ही सब कुछ जान चुकी थी। यह बयान विश्वास पर आधारित है, लेकिन इसके लिए कोई साक्ष्य या प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में सत्य का निर्धारण प्रमाण के आधार पर होता है (जैसे प्रत्यक्ष प्रमाण या शास्त्रों से प्रमाण)। यहाँ पर कोई प्रमाण नहीं है, जो सत्यता को स्थापित करता हो।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बिना किसी ठोस प्रमाण के विश्वास पर आधारित है।

आयत 43

आयत का अनुवाद:
"और ख़ुदा के सिवा जिसे वह पूजती थी, सुलेमान ने उससे उसे रोक दिया क्योंकि वह काफ़िर क़ौम की थी और आफ़ताब को पूजती थी।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): सुलेमान ने बिलक़ीस को सूर्य की पूजा से रोका क्योंकि वह एक काफ़िर क़ौम से थी।**
- **हेतु (Reason): यहाँ पर यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि किसी काफ़िर क़ौम से होना एक गलत आदत को जन्म देता है। लेकिन यह तर्क ठीक नहीं है, क्योंकि किसी व्यक्ति का काफ़िर होना या नहीं होना उसकी मानसिक और सांस्कृतिक स्थिति का ही परिणाम होता है, और इसे बाहरी तौर पर पूरी तरह से नियंत्रित नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): वैष्णव धर्म में किसी के आस्थाएँ केवल उनके व्यक्तिगत विश्वासों से निर्धारित होती हैं, और यह धर्म किसी के जन्म के आधार पर किसी को गलत नहीं ठहराता।**
- **निगमन (Conclusion): यह तर्क बहुत संकीर्ण दृष्टिकोण का है, क्योंकि यह व्यक्ति के धर्म और आस्थाओं को केवल क़ौम और जन्म के आधार पर तय करता है, जो सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं है।**

आयत 44

आयत का अनुवाद:
"फिर उससे कहा गया कि आप अब महल में चलिए तो जब उसने महल (में शीशे के फ़र्श) को देखा तो उसको गहरा पानी समझी और गुज़रने के लिए इस तरह अपने पाएचे उठा लिए कि अपनी दोनों पिन्डलियाँ खोल दी। सुलेमान ने कहा (तुम डरो नहीं) ये (पानी नहीं है) महल है जो शीशे से मढ़ा हुआ है।"

चुना गया न्याय तत्व:
विपरीत तथ्य (Hetvabhasa)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): महल के फर्श को पानी समझकर बिलक़ीस ने अपने पैरों को ऊँचा किया।**
- **हेतु (Reason): यहाँ पर यह तर्क प्रस्तुत किया जा रहा है कि बिलक़ीस ने महल के शीशे के फर्श को गहरे पानी के रूप में समझा। यह भ्रांतिपूर्ण धारणाएँ दार्शनिक दृष्टिकोण से गलत हैं, क्योंकि इस प्रकार के भ्रम को तर्क और प्रमाण द्वारा नकारा जा सकता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भ्रम की स्थिति को स्पष्ट रूप से नकारा गया है (जैसे वेदांत में माया का सिद्धांत)। यहाँ पर महल का भ्रम एक भ्रमित चेतना का परिणाम है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत विपरीत तथ्य** (Hetvabhasa) **का उदाहरण है, क्योंकि यह किसी वास्तविक स्थिति को कल्पना के रूप में प्रस्तुत करती है, जो तर्कसंगत नहीं है।**

आयत 45

आयत का अनुवाद:
"और अब मैं सुलेमान के साथ सारे जहाँ के पालने वाले ख़ुदा पर ईमान लाती हूँ और हम ही ने क़ौम समूद के पास उनके भाई सालेह को पैग़म्बर बनाकर भेजा कि तुम लोग ख़ुदा की इबादत करो तो वह सालेह के आते ही (मोमिन व काफ़िर) दो फरीक़ बनकर बाहम झगड़ने लगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
विपरीत तथ्य (Hetvabhasa)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): बिलक़ीस ने ख़ुदा पर विश्वास किया और सालेह के साथ समूद क़ौम का संदर्भ दिया।**
- **हेतु (Reason): यह आयत सालेह की पैग़म्बरी को लेकर काफ़िरों और मोमिनों के झगड़े को प्रस्तुत करती है। यहाँ पर यह तर्क किया गया है कि धार्मिक मतभेद के कारण झगड़े हो रहे हैं, लेकिन यह तर्क सही नहीं है, क्योंकि धार्मिक मतभेदों के कारण हिंसा या झगड़े नहीं होने चाहिए। प्रत्येक धर्म का अपना महत्व है और यह पूरी तरह से आत्मनिरिक्षण और तात्त्विक दृष्टिकोण से हल किया जा सकता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में सत्य को आत्मा के माध्यम से जाना जाता है, न कि बाहरी धार्मिक मतभेदों द्वारा।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत विपरीत तथ्य** (Hetvabhasa) **का उदाहरण है, क्योंकि यह धार्मिक मतभेदों को भड़काने के रूप में प्रस्तुत करती है, जो सामाजिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से अवांछनीय है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
41	Hetu	**मानसिक परख के लिए बाहरी बदलाव की आवश्यकता नहीं थी।**
42	Pramana	**विश्वास पर आधारित तर्क, प्रमाण के बिना।**
43	Prameya	**काफ़िर क़ौम से जन्म लेने का तर्क गलत है।**
44	Hetvabhasa	**भ्रमित मानसिकता का तर्क, वास्तविक स्थिति के विपरीत।**
45	Hetvabhasa	**धार्मिक मतभेदों के कारण झगड़े को बढ़ावा दिया गया।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तर्क, प्रमाण, और वास्तविकता से संबंधित कई विरोधाभास और भ्रांतियाँ हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, ये आयतें प्रमाण, तर्क, और सत्यता के दृष्टिकोण से अप्रमाणित और तात्त्विक रूप से कमजोर प्रतीत होती हैं।आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना:

आयत 46

आयत का अनुवाद:
"सालेह ने कहा ऐ मेरी क़ौम (आख़िर) तुम लोग भलाई से पहल बुराई के वास्ते जल्दी क्यों कर रहे हो तुम लोग ख़ुदा की बारगाह में तौबा व अस्तग़फार क्यों नहीं करते ताकि तुम पर रहम किया जाए।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): सालेह अपने लोगों से भलाई की ओर जल्दी करने की सलाह देते हैं, ताकि वे तौबा करें और रहम प्राप्त करें।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क प्रस्तुत किया जा रहा है कि यदि लोग तौबा करते हैं, तो ख़ुदा से रहम प्राप्त होगा। यह तर्क सही प्रतीत होता है, क्योंकि मानवता में सुधार और समाज में भलाई लाने का तरीका आत्म-स्वीकृति और माफी का होता है। लेकिन यह तर्क भी केवल धार्मिक मान्यता पर आधारित है और बिना सार्वभौमिक तर्क के प्रस्तुत किया जाता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी, विशेष रूप से कर्म सिद्धांत में, व्यक्ति का उद्धार आत्म-परिवर्तन और सही मार्ग पर चलने से ही होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका तर्क केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, और सार्वभौमिकता के संदर्भ में इसका निष्कर्ष प्रकट नहीं हो पाता।**

आयत 47

आयत का अनुवाद:
"वह लोग बोले हमने तो तुम से और तुम्हारे साथियों से बुरा शगुन पाया। सालेह ने कहा तुम्हारी बदकिस्मती ख़ुदा के पास है (ये सब कुछ नहीं) बल्कि तुम लोगों की आज़माइश की जा रही है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition)**: लोग सालेह से और उनके साथियों से बुरा शगुन (संकेत) मानते हैं, और सालेह इसे ख़ुदा की आज़माइश मानते हैं।
- **हेतु (Reason)**: यहाँ पर यह तर्क किया जा रहा है कि बुरी घटनाएँ वास्तव में ख़ुदा की ओर से आज़माइश होती हैं, न कि किसी व्यक्तिगत दोष के कारण। यह तर्क धार्मिक दृष्टिकोण से सही हो सकता है, लेकिन यह तर्क भी सार्वभौमिक नहीं है।
- **उदाहरण (Example)**: भारतीय दर्शन में बुराई या दुख को अक्सर जीवन की परीक्षा के रूप में देखा जाता है, जैसे कि भगवद गीता में कर्म और योग के द्वारा इसे नष्ट करने का मार्ग बताया गया है।
- **निगमन (Conclusion)**: इस आयत का तर्क धार्मिक संदर्भ में मान्य हो सकता है, लेकिन यह सार्वभौमिक दृष्टिकोण से कमजोर है, क्योंकि यह केवल एक धार्मिक विचारधारा पर आधारित है।

आयत 48

आयत का अनुवाद:
"और शहर में नौ आदमी थे जो मुल्क के बानीये फ़साद थे और इस्लाह की फिक्र न करते थे। उन लोगों ने (आपस में) कहा कि बाहम ख़ुदा की क़सम खाते जाओ।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्यापति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition)**: नौ आदमी जो फ़साद करने वाले थे, उन्होंने ख़ुदा की क़सम खाकर आपस में एक योजना बनाई।
- **हेतु (Reason)**: यह तर्क किया जा रहा है कि फ़साद फैलाने वालों की योजना एक निश्चित प्रकार की दुरात्मा के अनुसार थी, जो समाज के लिए नकारात्मक परिणाम लाती है। यह तर्क सही प्रतीत होता है, क्योंकि इस प्रकार के कृत्य समाज के लिए हानिकारक होते हैं।
- **उदाहरण (Example)**: भारतीय समाज में भी, जब बुरे तत्व एक साथ आकर समाज में विध्वंसक कार्य करते हैं, तो उनके कार्यों को नकारात्मक रूप में देखा जाता है। वे समाज में अव्यवस्था फैलाते हैं।

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत बुरे कार्यों के परिणामस्वरूप सामाजिक अस्थिरता को दिखाती है, और यह तर्क सही है कि समाज में फ़साद फैलाने वाले लोग समाज के लिए खतरे का कारण होते हैं।

आयत 49

आयत का अनुवाद:
"कि हम लोग सालेह और उसके लड़के बालो पर सब खून करें, उसके बाद उसके वाली वारिस से कह देंगे कि हम लोग उनके घर वालों को हलाक़ होते वक़्त मौजूद ही न थे और हम लोग तो यक़ीनन सच्चे हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** फ़साद करने वाले लोग सालेह और उसके परिवार को मारने का विचार करते हैं और बाद में झूठ बोलने की योजना बनाते हैं।
- **हेतु (Reason):** यह तर्क प्रस्तुत किया जा रहा है कि समाज में असहमति और हिंसा को बढ़ावा देने वाले लोग झूठ बोलने और धोखा देने का प्रयास करते हैं। यह तर्क सही है, क्योंकि असामाजिक तत्व समाज में झूठ बोलने और हिंसा फैलाने के लिए प्रेरित होते हैं।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में भी इस प्रकार के कार्यों को असामाजिक और अवैध माना गया है, जो समाज में अस्थिरता और भय पैदा करते हैं।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत तर्कपूर्ण है और दिखाती है कि समाज में हिंसा फैलाने और झूठ बोलने के लिए नकारात्मक मानसिकता और कार्यों की आवश्यकता होती है।

आयत 50

आयत का अनुवाद:
"और उन लोगों ने एक तदबीर की और हमने भी एक तदबीर की और (हमारी तदबीर की) उनको ख़बर भी न हुयी।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमन (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): दोनों पक्षों ने अपनी योजनाएँ बनाई और अंततः सच्चाई को छिपाने के प्रयास किए, लेकिन अंत में सच्चाई उजागर हो गई।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क दिखाता है कि चाहे कोई भी व्यक्ति या समूह अपनी तदबीरें बनाए, सत्य और न्याय के सामने उनका कोई अस्तित्व नहीं होता।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में सत्य को सर्वोत्तम माना गया है, और उसका सामना कोई भी तदबीर या योजना नहीं कर सकती। भगवद गीता में भी सत्य को अंतिम और अडिग बताया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत सत्य के अपरिहार्यता की ओर इशारा करती है, और यह दिखाती है कि किसी भी झूठी योजना या धोखाधड़ी का अंत हमेशा सत्य में होता है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
46	Hetu	**धार्मिक विश्वासों पर आधारित तर्क, सार्वभौमिक दृष्टिकोण से कमजोर।**
47	Prameya	**धार्मिक दृष्टिकोण से मान्य, लेकिन सार्वभौमिकता में कमी।**
48	Vyapti	**सही तर्क कि समाज में फ़साद फैलाने वाले लोग खतरे का कारण होते हैं।**
49	Hetu	**हिंसा और झूठ बोलने की योजना दिखाती है, समाज के लिए नकारात्मक परिणाम।**
50	Upamana	**सत्य के अपरिहार्य होने की ओर इशारा करता है, कोई भी योजना इसका सामना नहीं कर सकती।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कुछ तर्कों को धार्मिक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है, लेकिन ये तर्क सार्वभौमिक दृष्टिकोण से परिपूर्ण नहीं हैं। कुछ आयतों में सामाजिक अस्थिरता, हिंसा और झूठ के परिणामों को दिखाया गया है, जबकि अन्य आयतें धार्मिक विश्वासों और विचारों पर आधारित हैं, जो किसी विशेष धार्मिक संदर्भ में ठीक हो सकते हैं, लेकिन वे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 50

आयत का अनुवाद: "और उन लोगों ने एक तदबीर की और हमने भी एक तदबीर की और (हमारी तदबीर की) उनको ख़बर भी न हुयी।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यहाँ पर यह दावा किया गया है कि ईश्वर ने उन लोगों के ख़िलाफ एक तदबीर (चाल) बनाई थी और उन्हें इसका ज्ञान नहीं हुआ।**
- **हेतु (Reason): यह दावा इस पर आधारित है कि भगवान की तदबीर अदृश्य और अपरिहार्य है, जिससे इन लोगों को अपने परिणाम का पूर्वाभास नहीं हुआ। परंतु यह तर्क बिना किसी स्पष्ट प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में हम पाते हैं कि किसी भी घटनाक्रम के परिणाम की भविष्यवाणी और उसका कारण-कार्य संबंध स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। जैसे कि भाग्य (कर्मफल) को कर्म के आधार पर समझा जाता है, न कि अदृश्य और अप्रत्याशित "तदबीर" के आधार पर।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में बिना किसी प्रमाण के ईश्वर की अदृश्य योजना का दावा किया गया है, जो न्याय दर्शन के प्रमेय (प्रमाण) के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।**

आयत 51

आयत का अनुवाद: ”तो (ऐ रसूल) तुम देखो उनकी तदबीर का क्या (बुरा) अंजाम हुआ कि हमने उनको और सारी क़ौम को हलाक कर डाला।”

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह दावा करती है कि ईश्वर ने उन लोगों को उनकी तदबीर के परिणामस्वरूप नष्ट कर दिया।**
- **हेतु (Reason): यह आयत इस पर आधारित है कि ”तदबीर” का बुरा परिणाम था, और उसी के कारण उस समुदाय को विनाश का सामना करना पड़ा। लेकिन यह तर्क बिना किसी व्याख्या के प्रस्तुत किया गया है, और यह निष्कर्ष तर्कसंगत रूप से अप्रमाणिक प्रतीत होता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, जैसे कि वैदिक साहित्य में कर्म का सिद्धांत प्रकट होता है, जहां व्यक्ति के अच्छे और बुरे कर्मों के आधार पर उसके परिणाम तय होते हैं। यहाँ पर किसी तदबीर को जिम्मेदार ठहराने का कोई आधार नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में तर्क का अभाव है और यह न्याय दर्शन के ”कर्म” और ”फल” के सिद्धांत के विपरीत है।**

आयत 52

आयत का अनुवाद: ”ये बस उनके घर हैं कि उनकी नाफ़रमानियों की वज़ह से ख़ाली वीरान पड़े हैं, इसमे शक नहीं कि उस वाक़िये में वाक़िफ कार लोगों के लिए बड़ी इबरत है।”

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यहाँ यह दावा किया गया है कि उन लोगों के घर उनकी नाफ़रमानी के कारण वीरान हो गए और यह एक बड़ी इबरत (शिक्षा) है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत लोगों को नाफ़रमानी से बचने का संदेश देती है, लेकिन यह तर्क और उदाहरण के बिना एक सामान्य उपदेश के रूप में प्रस्तुत की जाती है। ”इबरत” का दावा, जो एक शिक्षात्मक उद्देश्य को दर्शाता है, वास्तविक उदाहरणों और प्रमाणों के बिना किया गया है।**

- **उदाहरण (Example):** हिंदू दर्शन में कर्मफल सिद्धांत (भगवद गीता, अध्याय 4, श्लोक 7-8) के आधार पर कर्मों के परिणाम के रूप में न्याय और सत्य का पालन किया जाता है, लेकिन इस आयत में ऐसा कोई व्यावहारिक उदाहरण या कारण नहीं दिया गया।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत केवल नैतिक शिक्षा देती है, लेकिन बिना किसी उपयुक्त प्रमाण के।

आयत 54

आयत का अनुवाद: "और (ऐ रसूल) लूत को (याद करो) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि क्या तुम देखभाल कर (समझ बूझ कर) ऐसी बेहयाई करते हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत लूत की क़ौम द्वारा की गई बेहयाई के बारे में है, जिसमें उन्होंने उनके खिलाफ तर्क दिया।
- **हेतु (Reason):** इस आयत में यह विचार प्रस्तुत किया गया है कि एक समुदाय को उसकी बेहयाई के लिए दंडित किया गया, लेकिन यह तर्क बिना अन्यथा प्रमाण के है। समाज में किसी व्यक्ति की गतिविधियों को गलत ठहराना और उसे दंडित करना, यह एक अप्रमाणित निष्कर्ष है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय समाज में कई ऐसे उदाहरण हैं, जहां धार्मिक और सांस्कृतिक धारा के खिलाफ जाने पर भी विभिन्न समुदायों ने अन्यथा समान अधिकारों को स्वीकार किया है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत बिना किसी स्पष्ट कारण या प्रमाण के एक समुदाय के खिलाफ निष्कर्ष प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के प्रमेय के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	**चुना गया तत्व**	**मुख्य आलोचना**

50	प्रमाण (Pramana)	बिना प्रमाण के ईश्वर की अदृश्य योजना का दावा किया गया है।
51	हेतू (Hetu)	तदबीर का आधार और परिणाम अनौचित्यपूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया गया।
52	उपमान (Upamana)	बिना वास्तविक प्रमाण के नैतिक शिक्षा दी गई।
54	प्रमेय (Prameya)	बेहयाई को बिना कारणों के गलत ठहराया गया।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में न्याय दर्शन के सिद्धांतों का उल्लंघन किया गया है, जैसे प्रमेय, प्रमाण, और तर्क। प्रत्येक आयत में विभिन्न तत्वों का अप्रमाणित या अपूर्ण रूप से उपयोग किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इन आयतों में दी गई अवधारणाएँ न तो तर्कसंगत हैं और न ही universally applicable हैं।

आयत 55 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत का अनुवाद: "क्या तुम औरतों को छोड़कर शहवत से मर्दों के आते हो (ये तुम अच्छा नहीं करते) बल्कि तुम लोग बड़ी जाहिल क़ौम हो तो लूत की क़ौम का इसके सिवा कुछ जवाब न था।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह दावा किया गया है कि लूत की क़ौम ने मर्दों से शहवत की क्रिया (समलैंगिकता) की, और इसके लिए उन्हें "जाहिल क़ौम" बताया गया।**
- **हेतु (Reason): यह आयत समलैंगिकता को "बेहयाई" और "जाहिलाना" क़ौम का कार्य मानती है, लेकिन यह तर्क बिना किसी सार्वभौमिक तर्क या प्रमाण के है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी समुदाय या कर्म को "जाहिलाना" कहने से पहले तर्कसंगत और प्रमाणिक आधार की आवश्यकता होती है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से समलैंगिकता के संदर्भ में, संस्कृत साहित्य (जैसे कि कामसूत्र) और अन्य भारतीय ग्रंथों में समलैंगिक संबंधों का उल्लेख मिलता है, जो यह साबित करता है कि ऐसे संबंधों को पहले समाज में नकारात्मक रूप से नहीं देखा जाता था। इससे यह सिद्ध होता है कि केवल एक विशिष्ट समुदाय के दृष्टिकोण से समलैंगिकता को "जाहिलाना" मानना तर्कसंगत नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में समलैंगिकता को नकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन यह तर्क और प्रमाण के बिना किया गया है। न्याय दर्शन में किसी भी समाज या व्यवहार को "जाहिलाना" कहना तब तक उचित नहीं होता जब तक कि इसके खिलाफ कोई तर्कसंगत और प्रमाणिक आधार प्रस्तुत न किया जाए। इस आयत में समलैंगिकता को एक "जाहिलाना" क़ौम की क्रिया के रूप में दर्शाया गया है, लेकिन यह एक सांस्कृतिक पूर्वाग्रह पर आधारित है, जो न्याय दर्शन के प्रमेय के सिद्धांत के विपरीत है।**

सारणी (आयत का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
55	**प्रमेय (Prameya)**	**समलैंगिकता को बिना तर्क और प्रमाण के "जाहिलाना" कहा गया है।**

समग्र निष्कर्ष:

यह आयत समलैंगिकता को नकारात्मक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है, जो न केवल विज्ञान और तर्क से मेल नहीं खाती, बल्कि न्याय दर्शन के प्रमेय और प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है। इस प्रकार की मान्यता को केवल सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों के आधार पर स्थापित करना तर्कसंगत नहीं है, और इसे सार्वभौमिक रूप से मान्य नहीं किया जा सकता।

आयतों 56 से 60 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 56 का अनुवाद:
"कि वह लोग बोल उठे कि लूत के खानदान को अपनी बस्ती (सदूम) से निकाल बाहर करो, ये लोग बड़े पाक साफ़ बनना चाहते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत लूत की क़ौम को उन पर आरोप लगाने का आधार प्रदान करती है कि वे अपनी पवित्रता का दावा करते हैं, जिसके कारण सदूम की क़ौम ने उन्हें निकालने का निर्णय लिया।**

- **हेतु (Reason): इस आयत में लूत की क़ौम को "पाक साफ़" होने का आरोप लगता है, लेकिन इस आरोप का कोई तार्किक आधार या प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी पर आरोप लगाने से पहले तर्क और प्रमाण का होना आवश्यक है। इसे इस आधार पर समझा जा सकता है कि वे स्वयं अपने कर्मों के कारण "पवित्र" थे, और इसलिए समाज से बाहर किया गया।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से वेदांत और सांख्य दर्शन में, व्यक्तित्व और आत्मा की शुद्धता का विचार किया गया है, जहां कोई भी व्यक्ति अपने आत्मिक स्तर पर पवित्र या अपवित्र होता है। अगर एक व्यक्ति अपने आत्मिक अभ्यास के माध्यम से शुद्ध है, तो यह समाज के द्वारा निर्धारित "पवित्रता" से अलग हो सकता है।**

- **निगमन (Conclusion): इस आयत का आरोप केवल सांस्कृतिक पूर्वाग्रह पर आधारित है, और इसका कोई तार्किक आधार नहीं है। न्याय दर्शन के अनुसार, इस तरह के आरोप केवल अप्रमाणिक**

होते हैं और इन्हें सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आयत 57 का अनुवाद:
"ग़रज हमने लूत को और उनके ख़ानदान को बचा लिया, मगर उनकी बीवी कि हमने उसकी तक़दीर में पीछे रह जाने वालों में लिख दिया था।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह कहा गया है कि लूत की पत्नी को उनकी तक़दीर के कारण पीछे छोड़ दिया गया।
- **हेतु (Reason):** इस आयत में भगवान की इच्छा और तक़दीर के आधार पर एक व्यक्ति की स्थिति तय की जाती है। लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, किसी की स्थिति और कर्मों को केवल "तक़दीर" के आधार पर तय नहीं किया जा सकता। यह तर्क की कमी को दर्शाता है, क्योंकि व्यक्तित्व और स्थिति को कर्म, ज्ञान और प्रयत्न द्वारा निर्धारित किया जाता है।
- **उदाहरण (Example):** गीता (अध्यक्ष 4, श्लोक 7-8) में भगवान कहते हैं कि वह धर्म की स्थापना के लिए अवतार लेते हैं और व्यक्तियों के कर्मों के आधार पर उन्हें फल देते हैं। यहां तक़दीर को केवल कर्मों का परिणाम माना गया है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांत के अनुरूप है।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में एक व्यक्ति के भविष्य को "तक़दीर" से जोड़कर स्थापित करना न्याय दर्शन के सिद्धांत के खिलाफ है, क्योंकि कर्म और प्रयत्न को सर्वोपरी माना जाता है।

आयत 58 का अनुवाद:
"और (फिर तो) हमने उन लोगों पर (पत्थर का) मेंह बरसाया, तो जो लोग डराए जा चुके थे उन पर क्या बुरा मेंह बरसा।"

चुना गया न्याय तत्व:
अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह कहा गया है कि भगवान ने बुरे कर्म करने वालों पर दंड स्वरूप पत्थर का बारिश भेजा।
- **हेतु (Reason):** यह आयत एक प्राकृतिक घटना को भगवान के न्याय के रूप में प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई तर्कसंगत आधार नहीं है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना या दंड को केवल अनुमान से स्वीकार करना उचित नहीं है, बल्कि इसे प्रमाण के साथ प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से वेदांत में, दंड या परिणामों को कर्मों के साथ जोड़ा गया है, जो प्रत्यक्ष रूप से देखे जा सकते हैं। इस तरह की घटना को केवल क़िस्मत या भगवान के निर्णय के रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत एक प्राकृतिक घटना को भगवान के दंड के रूप में प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई अनुभवजन्य आधार नहीं है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांत के खिलाफ है।

आयत 59 का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम कह दो (उनके हलाक़ होने पर) ख़ुदा का शुक्र और उसके बरगुज़ीदा बन्दों पर सलाम, भला ख़ुदा बेहतर है या वह चीज़ जिसे ये लोग शरीके ख़ुदा कहते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत भगवान की श्रेष्ठता का दावा करती है और अन्य देवी-देवताओं की पूजा को नकारती है।
- **हेतु (Reason):** यह आयत दावा करती है कि भगवान का गुणगान सबसे श्रेष्ठ है, और अन्य देवताओं की पूजा निरर्थक है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार यह तर्क सार्वभौमिक नहीं हो सकता। हर दर्शन या विश्वास में विभिन्न देवताओं की पूजा को समान महत्व दिया जाता है, और यह केवल सांस्कृतिक दृष्टिकोण पर आधारित है।

- **उदाहरण (Example):** भारतीय धर्मों में, विशेष रूप से हिंदू धर्म में, कई देवताओं की पूजा की जाती है, और उन्हें एक समान महत्व दिया जाता है। किसी एक देवता को श्रेष्ठ मानने का विचार सांस्कृतिक भिन्नताओं के आधार पर है, जो सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत अन्य धार्मिक दृष्टिकोणों को नकारते हुए केवल एक दृष्टिकोण को श्रेष्ठ मानने का दावा करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांत के विपरीत है।

आयत 60 का अनुवाद:
"भला वह कौन है जिसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और तुम्हारे वास्ते आसमान से पानी बरसाया, फिर हम ही ने पानी से दिलचस्प (ख़ुशनुमा) बाग़ उठाए, तुम्हारे तो ये बस की बात न थी कि तुम उनके दरख़्तों को उगा सकते। तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है (हरगिज़ नहीं) बल्कि ये लोग खुद अपने जी से गढ़ के बुतो को उसके बराबर बनाते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में भगवान की शक्ति और उसके साथ किसी और माबूद को जोड़ने के खिलाफ बात की गई है।
- **हेतु (Reason):** यह आयत दावा करती है कि भगवान की शक्ति के सामने किसी अन्य देवता या माबूद का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता। लेकिन यह विचार एक विशेष दृष्टिकोण पर आधारित है, और कोई सार्वभौमिक प्रमाण नहीं है जो इसे सिद्ध करता हो।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से वेदांत और सांख्य दर्शन में, परमात्मा के विभिन्न रूपों का अस्तित्व माना गया है, और यह केवल एक विश्वास और संस्कृति का प्रश्न है, जो सार्वभौमिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकारने के लिए कोई प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
56	हतु (Reason)	आरोप बिना प्रमाण के, केवल सांस्कृतिक पूर्वाग्रह पर आधारित।
57	प्रमाण (Pramana)	"तक़दीर" से भविष्य तय करना न्याय दर्शन के खिलाफ।
58	अनुमान (Anumana)	घटना को अनुमान से परिभाषित किया गया, कोई अनुभवजन्य प्रमाण नहीं।
59	व्याप्ति (Vyapti)	अन्य धार्मिक दृष्टिकोणों को नकारते हुए केवल एक को श्रेष्ठ मानना।
60	प्रमाण (Pramana)	परमात्मा के एकमात्र अस्तित्व का दावा सांस्कृतिक दृष्टिकोण पर आधारित।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में विभिन्न धार्मिक दृष्टिकोणों को नकारते हुए केवल एक विशेष दृष्टिकोण को श्रेष्ठ मानने की कोशिश की गई है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है। इन आयतों में प्रस्तुत किए गए विचार प्रमाण और तर्क के बिना हैं, और यह केवल सांस्कृतिक और धार्मिक भिन्नताओं के आधार पर हैं। इन्हें सार्वभौमिक रूप से स्वीकारने के लिए कोई प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है।

आयतों 56 से 60 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 56 का अनुवाद:
"कि वह लोग बोल उठे कि लूत के खानदान को अपनी बस्ती (सदूम) से निकाल बाहर करो, ये लोग बड़े पाक साफ़ बनना चाहते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत लूत की क़ौम को उन पर आरोप लगाने का आधार प्रदान करती है कि वे अपनी पवित्रता का दावा करते हैं, जिसके कारण सदूम की क़ौम ने उन्हें निकालने का निर्णय लिया।**

- **हेतु (Reason): इस आयत में लूत की क़ौम को "पाक साफ़" होने का आरोप लगता है, लेकिन इस आरोप का कोई तार्किक आधार या प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी पर आरोप लगाने से पहले तर्क और प्रमाण का होना आवश्यक है। इसे इस आधार पर समझा जा सकता है कि वे स्वयं अपने कर्मों के कारण "पवित्र" थे, और इसलिए समाज से बाहर किया गया।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से वेदांत और सांख्य दर्शन में, व्यक्तित्व और आत्मा की शुद्धता का विचार किया गया है, जहां कोई भी व्यक्ति अपने आत्मिक स्तर पर पवित्र या अपवित्र होता है। अगर एक व्यक्ति अपने आत्मिक अभ्यास के माध्यम से शुद्ध है, तो यह समाज के द्वारा निर्धारित "पवित्रता" से अलग हो सकता है।**

- **निगमन (Conclusion): इस आयत का आरोप केवल सांस्कृतिक पूर्वाग्रह पर आधारित है, और इसका कोई तार्किक आधार नहीं है। न्याय दर्शन के अनुसार, इस तरह के आरोप केवल अप्रमाणिक होते हैं और इन्हें सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता।**

आयत 57 का अनुवाद:
"ग़रज हमने लूत को और उनके ख़ानदान को बचा लिया, मगर उनकी बीवी कि हमने उसकी तक़दीर में पीछे रह जाने वालों में लिख दिया था।"

चुना गया न्याय तत्व:
 प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि लूत की पत्नी को उनकी तक़दीर के कारण पीछे छोड़ दिया गया।
- हेतु (Reason): इस आयत में भगवान की इच्छा और तक़दीर के आधार पर एक व्यक्ति की स्थिति तय की जाती है। लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, किसी की स्थिति और कर्मों को केवल "तक़दीर" के आधार पर तय नहीं किया जा सकता। यह तर्क की कमी को दर्शाता है, क्योंकि व्यक्तित्व और स्थिति को कर्म, ज्ञान और प्रयत्न द्वारा निर्धारित किया जाता है।
- उदाहरण (Example): गीता (अध्यक्ष 4, श्लोक 7-8) में भगवान कहते हैं कि वह धर्म की स्थापना के लिए अवतार लेते हैं और व्यक्तियों के कर्मों के आधार पर उन्हें फल देते हैं। यहां तक़दीर को केवल कर्मों का परिणाम माना गया है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांत के अनुरूप है।
- निगमन (Conclusion): इस आयत में एक व्यक्ति के भविष्य को "तक़दीर" से जोड़कर स्थापित करना न्याय दर्शन के सिद्धांत के खिलाफ है, क्योंकि कर्म और प्रयत्न को सर्वोपरी माना जाता है।

आयत 58 का अनुवाद:
 "और (फिर तो) हमने उन लोगों पर (पत्थर का) मेंह बरसाया, तो जो लोग डराए जा चुके थे उन पर क्या बुरा मेंह बरसा।"

चुना गया न्याय तत्व:
 अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि भगवान ने बुरे कर्म करने वालों पर दंड स्वरूप पत्थर का बारिश भेजा।
- हेतु (Reason): यह आयत एक प्राकृतिक घटना को भगवान के न्याय के रूप में प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई तर्कसंगत आधार नहीं है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना या दंड को

केवल अनुमान से स्वीकार करना उचित नहीं है, बल्कि इसे प्रमाण के साथ प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से वेदांत में, दंड या परिणामों को कर्मों के साथ जोड़ा गया है, जो प्रत्यक्ष रूप से देखे जा सकते हैं। इस तरह की घटना को केवल क़िस्मत या भगवान के निर्णय के रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत एक प्राकृतिक घटना को भगवान के दंड के रूप में प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका कोई अनुभवजन्य आधार नहीं है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांत के खिलाफ है।

आयत 59 का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम कह दो (उनके हलाक़ होने पर) ख़ुदा का शुक्र और उसके बरगुज़ीदा बन्दों पर सलाम, भला ख़ुदा बेहतर है या वह चीज़ जिसे ये लोग शरीके ख़ुदा कहते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत भगवान की श्रेष्ठता का दावा करती है और अन्य देवी-देवताओं की पूजा को नकारती है।
- **हेतु (Reason):** यह आयत दावा करती है कि भगवान का गुणगान सबसे श्रेष्ठ है, और अन्य देवताओं की पूजा निरर्थक है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार यह तर्क सार्वभौमिक नहीं हो सकता। हर दर्शन या विश्वास में विभिन्न देवताओं की पूजा को समान महत्व दिया जाता है, और यह केवल सांस्कृतिक दृष्टिकोण पर आधारित है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय धर्मों में, विशेष रूप से हिंदू धर्म में, कई देवताओं की पूजा की जाती है, और उन्हें एक समान महत्व दिया जाता है। किसी एक देवता को श्रेष्ठ मानने का विचार सांस्कृतिक भिन्नताओं के आधार पर है, जो सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत अन्य धार्मिक दृष्टिकोणों को नकारते हुए केवल एक दृष्टिकोण को श्रेष्ठ मानने का दावा करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांत के विपरीत है।

आयत 60 का अनुवाद:
"भला वह कौन है जिसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और तुम्हारे वास्ते आसमान से पानी बरसाया, फिर हम ही ने पानी से दिलचस्प (ख़ुशनुमा) बाग़ उठाए, तुम्हारे तो ये बस की बात न थी कि तुम उनके दरख़्तों को उगा सकते। तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है (हरगिज़ नहीं) बल्कि ये लोग खुद अपने जी से गढ़ के बुतो को उसके बराबर बनाते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में भगवान की शक्ति और उसके साथ किसी और माबूद को जोड़ने के खिलाफ बात की गई है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत दावा करती है कि भगवान की शक्ति के सामने किसी अन्य देवता या माबूद का कोई अस्तित्व नहीं हो सकता। लेकिन यह विचार एक विशेष दृष्टिकोण पर आधारित है, और कोई सार्वभौमिक प्रमाण नहीं है जो इसे सिद्ध करता हो।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से वेदांत और सांख्य दर्शन में, परमात्मा के विभिन्न रूपों का अस्तित्व माना गया है, और यह केवल एक विश्वास और संस्कृति का प्रश्न है, जो सार्वभौमिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकारने के लिए कोई प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
56	हतु (Reason)	आरोप बिना प्रमाण के, केवल सांस्कृतिक पूर्वाग्रह पर आधारित।

57	**प्रमाण (Pramana)**	**"तक़दीर" से भविष्य तय करना न्याय दर्शन के खिलाफ।**
58	**अनुमान (Anumana)**	**घटना को अनुमान से परिभाषित किया गया, कोई अनुभवजन्य प्रमाण नहीं।**
59	**व्याप्ति (Vyapti)**	**अन्य धार्मिक दृष्टिकोणों को नकारते हुए केवल एक को श्रेष्ठ मानना।**
60	**प्रमाण (Pramana)**	**परमात्मा के एकमात्र अस्तित्व का दावा सांस्कृतिक दृष्टिकोण पर आधारित।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में विभिन्न धार्मिक दृष्टिकोणों को नकारते हुए केवल एक विशेष दृष्टिकोण को श्रेष्ठ मानने की कोशिश की गई है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है। इन आयतों में प्रस्तुत किए गए विचार प्रमाण और तर्क के बिना हैं, और यह केवल सांस्कृतिक और धार्मिक भिन्नताओं के आधार पर हैं। इन्हें सार्वभौमिक रूप से स्वीकारने के लिए कोई प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है।

आयतों 61 से 65 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 61 का अनुवाद:
"भला वह कौन है जिसने ज़मीन को (लोगों के) ठहरने की जगह बनाया और उसके दरम्यान जा बजा नहरें दौड़ायी और उसकी मज़बूती के वास्ते पहाड़ बनाए और (मीठे खारी) दरियाओं के दरम्यान हदे फ़ासिल बनाया तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है (हरगिज़ नहीं) बल्कि उनमें के अकसर कुछ जानते ही नहीं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह सवाल उठाया गया है कि क्या ऐसे शक्तिशाली सृष्टिकर्ता के अलावा कोई और माबूद हो सकता है।
- **हेतु (Reason):** यह आयत ज़मीन और उसके प्राकृतिक तत्वों के सृजन को भगवान की शक्ति का प्रमाण मानती है, लेकिन यह विचार केवल एक विशिष्ट धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है। न्याय दर्शन के अनुसार, यह दृष्टिकोण सार्वभौमिक प्रमाण नहीं है। दुनिया की प्राकृतिक विशेषताएँ किसी भी धार्मिक विश्वास से परे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी समझी जा सकती हैं।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से सांक्य और योग दर्शन में, प्रकृति (प्रकृति शक्ति) को ही ब्रह्मा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह न केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण है, बल्कि इसे एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी देखा जा सकता है, जो प्राकृतिक कारणों और प्रभावों पर आधारित है।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में प्रस्तुत विचार केवल एक विशिष्ट धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं, और इससे इस बात का प्रमाण नहीं मिलता कि केवल एक भगवान ही इस ब्रह्मांड का सृजन कर सकता है।

आयत 62 का अनुवाद:
"भला वह कौन है कि जब मुज़तर उसे पुकारे तो दुआ कुबूल करता है और मुसीबत को दूर करता है और तुम लोगों को ज़मीन में (अपना) नायब बनाता है तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद है (हरगिज़ नहीं) उस पर भी तुम लोग बहुत कम नसीहत व इबरत हासिल करते हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** आयत यह दावा करती है कि भगवान संकट के समय मदद करता है और लोगों को अपनी ज़मीन पर नायब बनाता है।
- **हेतु (Reason):** यह विचार केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है, और इसे अन्य प्राकृतिक कारणों के प्रभाव से नहीं जोड़ा जाता। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी घटना या शक्ति को

केवल भगवान से जोड़ने के बजाय उसे वैज्ञानिक या तात्त्विक कारणों से भी समझा जाना चाहिए।

- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में कर्म के सिद्धांत के तहत यह माना गया है कि मानव के कर्मों का फल उसे ही भुगतना पड़ता है। यह तर्क धार्मिक दृष्टिकोण से परे है और यह निष्कर्ष केवल प्राकृतिक कारणों पर आधारित है।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में भगवान के प्रभाव को एक विशेष धार्मिक विश्वास के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जबकि इसे विज्ञान और तात्त्विक दृष्टिकोण से भी समझा जा सकता है। इसके अलावा, इस विचार में किसी वस्तुनिष्ठ प्रमाण का अभाव है।

आयत 63 का अनुवाद:
"भला वह कौन है जो तुम लोगों की ख़ुशकी और तरी की तारिक़ियों में राह दिखाता है और कौन उसकी बाराने रहमत के आगे आगे (बारिश की) ख़ुशखबरी लेकर हवाओं को भेजता है-क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है (हरगिज़ नहीं) ये लोग जिन चीज़ों को ख़ुदा का शरीक ठहराते हैं ख़ुदा उससे बालातर है।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह दावा किया गया है कि भगवान के अलावा कोई और नहीं है जो बारिश और हवा की दिशा को नियंत्रित करता है।
- **हेतु (Reason):** इस आयत में प्राकृतिक घटनाओं को भगवान की शक्ति से जोड़ने का प्रयास किया गया है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, यह केवल एक सांस्कृतिक दृष्टिकोण है। प्राकृतिक घटनाओं को विज्ञान से समझा जा सकता है, जैसे मौसम विज्ञान और जलवायु परिवर्तन, जो इन घटनाओं के प्राकृतिक कारणों को स्पष्ट करते हैं।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय वेदांत में प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्या को ब्रह्म की इच्छा और प्रकृति के संतुलन से जोड़ा गया है। यह एक दृष्टिकोण है, लेकिन इसके अलावा आधुनिक विज्ञान की व्याख्याएँ भी इस प्रक्रिया को विस्तार से समझाती हैं।

- **निगमन (Conclusion): इस आयत में प्रस्तुत विचार केवल एक विशिष्ट धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जबकि इसे आधुनिक विज्ञान के माध्यम से भी समझा जा सकता है।**

आयत 64 का अनुवाद:

"भला वह कौन है जो ख़िल्क़त को नए सिरे से पैदा करता है फिर उसे दोबारा (मरने के बाद) पैदा करेगा और कौन है जो तुम लोगों को आसमान व ज़मीन से रिज़्क़ देता है- तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है (हरगिज़ नहीं) (ऐ रसूल) तुम (इन मुशरेकीन से) कहा दो कि अगर तुम सच्चे हो तो अपनी दलील पेश करो।"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह दावा किया गया है कि भगवान ही ख़िल्क़त (सृष्टि) का सृजन करता है और वही पुनः जीवन देता है।**

- **हेतु (Reason): यह विचार भी केवल एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जबकि न्याय दर्शन के अनुसार, जीवन के पुनर्नवनीकरण और अस्तित्व का सिद्धांत वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी देखा जा सकता है। जीवन और सृष्टि के उत्पत्ति के बारे में अन्य तात्त्विक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी मौजूद हैं।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय सांख्य दर्शन में, सृष्टि और जीवन को पुनः उत्पन्न होने की प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जो लगातार परिवर्तन और विकास की ओर इशारा करता है। यह विचार केवल धार्मिक विश्वास नहीं है, बल्कि यह जीवन के चक्रीय स्वरूप को दर्शाता है।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत पुनः जीवन और सृष्टि के सृजन को भगवान के साथ जोड़ने का प्रयास करती है, लेकिन इसका कोई प्रमाणित वैज्ञानिक आधार नहीं है। इसे अन्य दर्शन और तात्त्विक दृष्टिकोणों से भी समझा जा सकता है।**

आयत 65 का अनुवाद:

"(ऐ रसूल इन से) कह दो कि जितने लोग आसमान व ज़मीन में हैं उनमें से कोई भी ग़ैब की बात के सिवा नहीं जानता और वह भी तो नहीं समझते कि क़ब्र से दोबारा कब जिंदा उठ खड़े किए जाएँगें।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह दावा किया गया है कि कोई भी व्यक्ति कब्र से पुनः जीवित होने के समय को नहीं जानता।**
- **हेतु (Reason): यह विचार भी केवल एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जबकि न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी व्यक्ति की मृत्यु और पुनर्जीवित होने के बारे में ज्ञान और प्रमाण का अभाव है। यह विचार किसी प्रमाणिक आधार से परे है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से वेदांत में, मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में भिन्न-भिन्न विचार हैं, जो किसी निश्चित समय या घटना के बारे में नहीं बताते, बल्कि कर्म के फल को ध्यान में रखते हुए पुनर्जन्म की प्रक्रिया को मानते हैं।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में जो विचार प्रस्तुत किया गया है, वह केवल एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसका कोई वस्तुनिष्ठ प्रमाण नहीं है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
61	प्रमाण (Pramana)	प्राकृतिक घटनाओं को केवल भगवान से जोड़ना, इसका वैज्ञानिक आधार नहीं।
62	हतु (Reason)	संकटों को केवल भगवान से जोड़ना, इसके प्राकृतिक कारणों का विचार नहीं किया गया।

63	**व्याप्ति (Vyapti)**	**प्राकृतिक घटनाओं को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से जोड़ना, इसके वैज्ञानिक आधार की कमी।**
64	**हतु (Reason)**	**सृष्टि और जीवन के पुनर्नवनीकरण को केवल भगवान से जोड़ना, इसके अन्य तात्त्विक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव।**
65	**प्रमाण (Pramana)**	**पुनः जीवित होने के सिद्धांत को केवल धार्मिक विश्वास से जोड़ना, इसका वैज्ञानिक आधार नहीं।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत किए गए विचार केवल विशिष्ट धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं और इनका कोई वैज्ञानिक या वस्तुनिष्ठ प्रमाण नहीं है। इन्हें न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार तर्कसंगत रूप से स्थापित करने के लिए पर्याप्त प्रमाण नहीं दिए गए हैं। इसके अलावा, इन विचारों को अन्य दर्शन और तात्त्विक दृष्टिकोणों से भी चुनौती दी जा सकती है।

आयतों 66 से 70 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 66 का अनुवाद:
"बल्कि (असल ये है कि) आख़िरत के बारे में उनके इल्म का ख़ात्मा हो गया है बल्कि उसकी तरफ से शक में पड़ें हैं बल्कि (सच ये है कि) इससे ये लोग अँधे बने हुए हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में दावा किया गया है कि लोग आख़िरत (परलोक) के बारे में अज्ञानी हैं और इसमें शंका करते हैं, जिससे वे अंधे हो गए हैं।**
- **हेतु (Reason): आयत का यह विचार एक धार्मिक मान्यता पर आधारित है, जबकि न्याय दर्शन में अज्ञानता और शंका को किसी प्रमाण के बिना आरोपित करना तर्कसंगत नहीं है। सत्य का ज्ञान**

प्राप्त करने के लिए प्रमेय (वस्तु) का स्पष्ट रूप से प्रमाण होना आवश्यक है।

- **उदाहरण (Example):** भारतीय वेदांत में ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रमाण की आवश्यकता मानी जाती है। इसके बिना किसी भी विषय को अज्ञानता या शंका से जोड़ना गलत है, क्योंकि ज्ञान और समझ का क्षेत्र केवल विश्वास या अंधविश्वास पर आधारित नहीं हो सकता।

- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में परलोक के अस्तित्व पर शंका करने वाले लोगों को अंधे कहा गया है, लेकिन यह तर्क बिना किसी प्रमाण के दिया गया है। यह एक विचार है, न कि वस्तुनिष्ठ सत्य।

आयत 67 का अनुवाद:
"और कुफ़्फ़ार कहने लगे कि क्या जब हम और हमारे बाप दादा (सड़ गल कर) मिट्टी हो जाएँगं तो क्या हम फिर निकाले जाएँगें।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** आयत में यह दावा किया गया है कि काफ़िरों ने यह प्रश्न उठाया कि क्या मृत्यु के बाद वे पुनः जीवित होंगे।

- **हेतु (Reason):** यह तर्क एक भौतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कमजोर है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी धार्मिक घटना या विश्वास को केवल तर्क और प्रमाण से जोड़ा जा सकता है। यहां पर मृत शरीर के पुनः जीवित होने का विचार बिना किसी प्रमाण या तर्क के प्रस्तुत किया गया है।

- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में पुनर्जन्म का सिद्धांत आत्मा के चक्र के रूप में बताया गया है, लेकिन यह सिद्धांत भी तात्त्विक है, और इसे प्राकृतिक कारणों से नहीं जोड़ा गया।

- **निगमन (Conclusion):** काफ़िरों का यह प्रश्न वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कोई नया या उचित तर्क नहीं प्रस्तुत करता है। यह केवल धार्मिक विश्वास और कल्पना पर आधारित है, जिसे प्रमाणित नहीं किया गया।

आयत 68 का अनुवाद:
"उसका तो पहले भी हम से और हमारे बाप दादाओं से वायदा किया गया था (कहाँ का उठना और कैसी क़यामत) ये तो हो न हो अगले लोगों के ढकोसले हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): आयत में यह कहा गया है कि काफ़िरों ने यह आरोप लगाया कि उठाने और क़यामत के बारे में केवल अफवाहें हैं, जो पहले से लोगों द्वारा फैलायी गई हैं।**
- **हेतु (Reason): यह आरोप बिना किसी प्रमाण के लगाया गया है। न्याय दर्शन में, किसी भी कथन या विश्वास को प्रमेय (वस्तु) से जोड़कर जांचने की आवश्यकता होती है। बिना प्रमाण के किसी बात को अफवाह कहना तर्कसंगत नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से उपनिषदों में, आत्मा के अस्तित्व के बारे में सुस्पष्ट प्रमाण दिए गए हैं, जो वैज्ञानिक और तात्त्विक रूप से प्रमाणित किए जा सकते हैं।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में काफ़िरों द्वारा उठाया गया आरोप केवल विश्वासों पर आधारित है, और बिना किसी प्रमाण के इसे केवल अफवाह कहना उचित नहीं है। इसके खिलाफ कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक तर्क प्रस्तुत नहीं किया गया है।**

आयत 69 का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) लोगों से कह दो कि रुए ज़मीन पर ज़रा चल फिर कर देखो तो गुनाहगारों का अन्जाम क्या हुआ।"

चुना गया न्याय तत्व:
उदाहरण (Example)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): आयत में यह कहा गया है कि गुनाहगारों के अंजाम को देखने के लिए जमीन पर चल-फिरकर देखो।**
- **हेतु (Reason): यह दृष्टिकोण गुनाहगारों के इतिहास को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करता है, लेकिन यह तात्त्विक दृष्टिकोण के बजाय केवल नैतिक शिक्षा पर आधारित है। न्याय दर्शन में प्रमाण के बिना किसी घटना या विचार को केवल उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करना ठीक नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में कर्मफल के सिद्धांत के तहत, यह माना जाता है कि हर व्यक्ति अपने कर्मों के परिणाम को भुगतता है, लेकिन इसका कोई भौतिक प्रमाण या ऐतिहासिक उदाहरण नहीं है। इसे तात्त्विक रूप से ही समझा जा सकता है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में दिए गए उदाहरण का कोई वैज्ञानिक या वस्तुनिष्ठ आधार नहीं है। यह केवल नैतिक शिक्षा के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों के परिणाम पर आधारित है, लेकिन यह निष्कर्ष सार्वभौमिक नहीं है।**

आयत 70 का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम उनके हाल पर कुछ अफ़सोस न करो और जो चालें ये लोग (तुम्हारे ख़िलाफ़) चल रहे हैं उससे तंग दिल न हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि रसूल को उन लोगों की चालों पर अफसोस नहीं करना चाहिए जो उनके खिलाफ चल रहे हैं।**
- **हेतु (Reason): यह विचार धार्मिक दृष्टिकोण से उचित हो सकता है, लेकिन न्याय दर्शन में किसी भी तात्त्विक विचार को प्रमाणित करने के लिए प्रमाण आवश्यक है। यह दृष्टिकोण केवल एक धार्मिक परिपेक्ष्य से प्रस्तुत किया गया है, जो किसी तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार से जुड़ा नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में संतों और महात्माओं के खिलाफ लोगों द्वारा चलने वाली चालों को अविनाशी आत्मा और सत्य के मार्ग पर चलने के संदर्भ में देखा जाता है। यह विचार न**

केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण है, बल्कि जीवन के सत्य को समझने के बारे में भी है।

- **निगमन (Conclusion): इस आयत में प्रस्तुत विचार केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, और इसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक आधार नहीं है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
66	प्रमेय (Prameya)	परलोक पर शंका करने वालों को अंधा कहना, इसका कोई वस्तुनिष्ठ प्रमाण नहीं है।
67	हतु (Reason)	मृत्यु के बाद पुनः जीवन के सिद्धांत को बिना प्रमाण के आरोपित किया गया।
68	प्रमेय (Prameya)	काफ़िरों का आरोप बिना प्रमाण के, केवल विश्वास पर आधारित है।
69	उदाहरण (Example)	गुनाहगारों के अंजाम का उदाहरण केवल नैतिक शिक्षा पर आधारित है, तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।
70	उपमान (Upamana)	धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत विचार, इसका कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत विचार मुख्य रूप से धार्मिक दृष्टिकोणों पर आधारित हैं और इनके लिए कोई वस्तुनिष्ठ प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं प्रस्तुत किया गया है। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, इन विचारों को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त तर्क नहीं हैं, और इन्हें केवल विश्वासों के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिन्हें वैज्ञानिक या तात्त्विक दृष्टिकोण से चुनौती दी जा सकती है।

आयतों 71 से 75 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 71 का अनुवाद:
"और ये (कुफ़्फ़ार मुसलमानों से) पूछते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (आख़िर) ये (क़यामत या अज़ाब का) वायदा कब पूरा होगा।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): आयत में यह सवाल उठाया गया है कि काफ़िर मुसलमानों से यह पूछते हैं कि क़यामत या अज़ाब का वायदा कब पूरा होगा, अगर वे सच बोलते हैं।**
- **हेतु (Reason): यह सवाल काफ़िरों के तर्क पर आधारित है, जो बिना तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण के केवल धार्मिक मान्यताओं पर आधारित हैं। न्याय दर्शन में, किसी दावे का सत्यापन प्रमाणों और प्रमाणित तथ्यों पर आधारित होना चाहिए, न कि केवल भविष्यवाणियों या विश्वासों पर।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में समय और काल का गहराई से विश्लेषण किया गया है। वेदांत के अनुसार, समय चक्र में प्रत्येक घटना का अपने स्थान और समय पर होना निश्चित होता है, परंतु उसे विश्वास और प्रमाण के बिना केवल भविष्यवाणी के रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में काफ़िरों द्वारा उठाए गए प्रश्न का कोई ठोस तर्क नहीं है, क्योंकि क़यामत या अज़ाब का घटनाक्रम केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, जबकि तात्त्विक दृष्टिकोण में इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।**

आयत 72 का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) तुम कह दो कि जिस (अज़ाब) की तुम लोग जल्दी मचा रहे हो क्या अजब है इसमे से कुछ करीब आ गया हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition)**: आयत में यह कहा गया है कि काफ़िरों की जल्दी के बावजूद, अज़ाब (सजा) उनके पास नहीं आया है।
- **हेतु (Reason)**: यह विचार केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और इसे किसी वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण से नहीं जोड़ा गया है। न्याय दर्शन में प्रमाण के बिना किसी घटना को भविष्य में घटित होने की संभावना से जोड़ना गलत है।
- **उदाहरण (Example)**: भारतीय दार्शनिक परंपराओं में, जैसे वेदांत और सांख्य, प्रत्येक घटना को अपने कारण (कर्म) और समय के आधार पर ही देखा जाता है। भविष्य में होने वाली घटनाओं को केवल तात्त्विक प्रमाण से जोड़ा जा सकता है, न कि केवल विश्वासों और धार्मिक दावों से।
- **निगमन (Conclusion)**: इस आयत में दावा किया गया अज़ाब केवल धार्मिक विश्वास के रूप में प्रस्तुत किया गया है और इसका कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं है।

आयत 73 का अनुवाद:
"और इसमें तो शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार लोगों पर बड़ा फज़ल व करम करने वाला है मगर बहुतेरे लोग (उसका) शक्र नहीं करते।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition)**: इस आयत में कहा गया है कि परमेश्वर का करुणा और कृपा असीम है, लेकिन बहुत से लोग उसका शुक्र नहीं करते।
- **हेतु (Reason)**: यह विचार धार्मिक परिपेक्ष्य से सही हो सकता है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी सार्वभौमिक सत्य को केवल धर्म या विश्वास के आधार पर तय नहीं किया जा सकता। इस प्रकार का तर्क संदेहपूर्ण होता है जब तक कि इसे प्रमाणित न किया जाए।
- **उदाहरण (Example)**: भारतीय दर्शन में, जैसे ज्ञान और ध्यान के माध्यम से परमात्मा के सत्य को जाना जा सकता है। यह सत्य व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित होता है, न कि केवल विश्वास या धार्मिक विचार पर।

- **निगमन (Conclusion): यह आयत केवल एक धार्मिक दावे के रूप में प्रस्तुत की गई है, जिसमें कोई प्रमाण नहीं दिया गया है, जिससे इसे तात्त्विक दृष्टिकोण से सिद्ध किया जा सके।**

आयत 74 का अनुवाद:
"और इसमें तो शक नहीं जो बातें उनके दिलों में पोशीदा हैं और जो कुछ ये एलानिया करते हैं तुम्हारा परवरदिगार यक़ीनी जानता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कहा गया है कि परमेश्वर उनके दिलों के छिपे हुए विचारों और शब्दों को जानता है।**
- **हेतु (Reason): यह विचार धार्मिक दृष्टिकोण से सही हो सकता है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी विचार या विश्वास को प्रमाण के बिना सत्य नहीं माना जा सकता है। केवल विश्वास के आधार पर किसी चीज़ को सत्य नहीं ठहराया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से योग और ध्यान के माध्यम से, एक व्यक्ति आत्मा और परमात्मा से जुड़कर अपनी आंतरिक स्थिति को जान सकता है। यह ज्ञान केवल व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित होता है, जो किसी बाहरी प्रमाण से सिद्ध नहीं होता।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में किसी भी आंतरिक विचार के ज्ञान को बिना प्रमाण के धार्मिक विश्वास के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसे न्याय दर्शन के अनुसार प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

आयत 75 का अनुवाद:
"और आसमान व ज़मीन में कोई ऐसी बात पोशीदा नहीं जो वाज़ेए व रौशन किताब (लौहे महफ़ूज़) में (लिखी) मौजूद न हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह दावा किया गया है कि आसमान और ज़मीन में कोई ऐसी बात नहीं है जो लौहे महफ़ूज़ में न लिखी हो।**
- **हेतु (Reason): यह विचार केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसे किसी प्रमाण या तात्त्विक आधार से जोड़ा नहीं जा सकता। न्याय दर्शन में, कोई भी दावा या विश्वास प्रमाण के बिना सत्य नहीं माना जा सकता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में सत्य के ज्ञात होने का आधार केवल ज्ञान और तात्त्विक प्रमाण होता है, न कि केवल धार्मिक या विश्वास आधारित विचारों से।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में दावा किया गया विचार केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई प्रमाण नहीं है जो इसे तात्त्विक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सिद्ध किया जा सके।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
71	हतु (Reason)	**क़यामत के बारे में सवाल उठाना बिना प्रमाण के, केवल विश्वास पर आधारित है।**
72	प्रमाण (Pramana)	**अज़ाब के बारे में दावा करना बिना किसी तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार के।**
73	व्याप्ति (Vyapti)	**परमेश्वर के करुणा का दावा बिना प्रमाण के, केवल विश्वास पर आधारित है।**
74	प्रमाण	**दिलों के छिपे विचारों के ज्ञान का दावा बिना प्रमाण के प्रस्तुत किया गया**

	(Pramana)	है।
75	प्रमाण (Pramana)	लौहे महफ़ूज़ में सब कुछ लिखी हुई बातें केवल विश्वास पर आधारित हैं, और प्रमाण से सिद्ध नहीं की जा सकती।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत विचारों को केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित किया गया है और इनमें कोई वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण नहीं दिए गए हैं। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, इन विचारों को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त तर्क और प्रमाण नहीं हैं। इन दावों को केवल विश्वास और आस्थाओं के रूप में देखा जा सकता है, जिन्हें तात्त्विक दृष्टिकोण से चुनौती दी जा सकती है।

आयतों 76 से 80 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 76 का अनुवाद:
"इसमें भी शक नहीं कि ये कुरआन बनी इसराइल पर उनकी अक्सर बातों को जिन में ये इख़्तेलाफ़ करते हैं ज़ाहिर कर देता है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि कुरआन बनी इसराइल की बातों को उजागर करता है, जिनमें वे इख़्तिलाफ़ करते हैं।**
- **हेतु (Reason): यह विचार कि कुरआन इन्कार और मतभेदों को उजागर करता है, एक निश्चित दृष्टिकोण से धार्मिक विश्वासों पर आधारित है। यह सत्य प्रमाणों और तात्त्विक आधारों पर आधारित नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में सत्य को व्यक्तिगत अनुभव और तात्त्विक प्रमाणों के माध्यम से प्रमाणित किया जाता है, जबकि यह धार्मिक दृष्टिकोण केवल विश्वास पर आधारित है।**

- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में जो दावा किया गया है, वह धार्मिक विश्वासों पर आधारित है और इसे वैज्ञानिक या तात्त्विक प्रमाण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।

आयत 77 का अनुवाद:
"और इसमें भी शक नहीं कि ये कुरआन इमानदारों के वास्ते अज़सरतापा हिदायत व रहमत है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में कहा गया है कि कुरआन ईमानदारों के लिए हिदायत और रहमत है।
- **हेतु (Reason):** यह विचार केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें किसी व्यक्ति या समुदाय के लिए हिदायत और रहमत केवल विश्वास के आधार पर मानी जाती है, न कि किसी प्रमाणिक सत्य पर।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, जैसे वेदांत और योग के माध्यम से आत्मज्ञान और परमात्मा का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। यह ज्ञान केवल व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित होता है, न कि धार्मिक विश्वासों पर।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत का दावा बिना प्रमाण और तात्त्विक आधार के प्रस्तुत किया गया है, और यह केवल विश्वास और आस्थाओं पर आधारित है, जिसे तात्त्विक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।

आयत 78 का अनुवाद:
"(ऐ रसूल) बेशक तुम्हारा परवरदिगार अपने हुक्म से उनके आपस (के झगड़ों) का फैसला कर देगा और वह (सब पर) ग़ालिब और वाक़िफ़कार है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): आयत में यह कहा गया है कि परमेश्वर अपने हुक्म से झगड़ों का फैसला कर देगा और वह सब पर ग़ालिब और वाक़िफ़कार है।**
- **हेतु (Reason): यह विचार धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसका कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं दिया गया है। किसी भी विवाद का निष्पक्ष समाधान सिर्फ प्रमाणों और तात्त्विक दृष्टिकोण से किया जा सकता है, न कि केवल धार्मिक विश्वासों पर।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, किसी भी विवाद या झगड़े का समाधान तर्क, प्रमाण और न्याय पर आधारित होता है। केवल धार्मिक विश्वासों के आधार पर समाधान प्रस्तुत करना तर्कसंगत नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में किए गए दावे का कोई प्रमाण या तात्त्विक आधार नहीं है, और यह केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।**

आयत 79 का अनुवाद:
"तो (ऐ रसूल) तुम ख़ुदा पर भरोसा रखो बेशक तुम यक़ीनी सरीही हक़ पर हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में रसूल को कहा गया है कि वह परमेश्वर पर भरोसा रखें, क्योंकि वह सत्य पर हैं।**
- **हेतु (Reason): यह विश्वास पूरी तरह से धार्मिक परिपेक्ष्य पर आधारित है, जिसमें परमेश्वर के सत्य पर भरोसा करने का आग्रह किया गया है। यह दावा तात्त्विक या प्रमाणिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में सत्य को केवल ज्ञान और व्यक्तिगत अनुभव से ही जाना जा सकता है, न कि केवल विश्वासों से।**

- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में जो दावा किया गया है, वह केवल विश्वास पर आधारित है, और इसे तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 80 का अनुवाद:
"बेशक न तो तुम मुर्दों को (अपनी बात) सुना सकते हो और न बहरों को अपनी आवाज़ सुना सकते हो (ख़ासकर) जब वह पीठ फेर कर भाग ख़ड़ें हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** आयत में यह कहा गया है कि मुर्दों और बहरों को कोई भी अपनी बात नहीं सुना सकता है, खासकर जब वे पीठ फेर कर चले जाते हैं।
- **हेतु (Reason):** यह विचार भौतिक और तात्त्विक दृष्टिकोण से ठीक है, क्योंकि मुर्दों को शारीरिक रूप से जीवित करना और बहरों को सुनाना संभव नहीं है। यह तर्क वैज्ञानिक और प्रमाणिक दृष्टिकोण से प्रमाणित है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में भी किसी भी अज्ञेय या असंभव घटना के लिए तर्क और प्रमाण की आवश्यकता मानी जाती है। इसी प्रकार, मुर्दों और बहरों से संवाद स्थापित करना तात्त्विक और भौतिक दृष्टिकोण से असंभव है।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में जो दावा किया गया है, वह वैज्ञानिक और भौतिक रूप से सत्य है, और यह तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित किया जा सकता है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना

76	प्रमाण (Pramana)	कुरआन के द्वारा बनी इसराइल के मतभेदों का उजागर करना केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।
77	प्रमाण (Pramana)	कुरआन का इमानदारों के लिए हिदायत और रहमत होना केवल विश्वास पर आधारित है, प्रमाणित नहीं।
78	हतु (Reason)	विवादों के समाधान का दावा बिना प्रमाण के, केवल विश्वास पर आधारित है।
79	प्रमाण (Pramana)	परमेश्वर पर भरोसा रखने का आग्रह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है, तात्त्विक प्रमाण नहीं है।
80	हतु (Reason)	मुर्दों और बहरों से संवाद की असंभवता भौतिक और तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में अधिकांश दावे धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं और इनमें कोई ठोस तात्त्विक या प्रमाणिक आधार नहीं दिया गया है। हालांकि, आयत 80 में मुर्दों और बहरों के संबंध में जो दावा किया गया है, वह भौतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही है। अन्य आयतें केवल विश्वास पर आधारित हैं, जिन्हें तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।

आयतों 81 से 85 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 81 का अनुवाद:
"और न तुम अँधें को उनकी गुमराही से राह पर ला सकते हो तुम तो बस उन्हीं लोगों को (अपनी बात) सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर इमान रखते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि आप (रसूल) केवल उन्हीं लोगों को अपनी बात सुना सकते हैं जो कुरआन पर विश्वास रखते हैं, और अंधों (गुमराह लोगों) को रास्ता नहीं दिखा सकते।**
- **हेतु (Reason): यह विचार धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें यह माना गया है कि केवल विश्वास रखने वाले ही सही मार्गदर्शन को स्वीकार करते हैं। यह दावा तात्त्विक और प्रमाणिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से वेदांत और योग में, व्यक्ति की आत्मा (आत्मज्ञान) से जुड़ी कोई भी गुमराही या भ्रम केवल सही ज्ञान और तात्त्विक प्रमाणों से हटाया जा सकता है, न कि केवल विश्वास से।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत का दावा विश्वास पर आधारित है और इसका तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है। इस प्रकार, यह दावा तार्किक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।**

आयत 82 का अनुवाद:
"फिर वही लोग तो मानने वाले भी हैं जब उन लोगों पर (क़यामत का) वायदा पूरा होगा तो हम उनके वास्ते ज़मीन से एक चलने वाला निकाल खड़ा करेंगे जो उनसे ये बाते करेंगा कि (फलां फलां) लोग हमारी आयतो का यक़ीन नहीं रखते थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि क़यामत के दिन एक चलने वाला निकाला जाएगा जो उन लोगों से बात करेगा जिन्होंने कुरआन को नहीं माना।**
- **हेतु (Reason): यह विचार बिना प्रमाण और तात्त्विक आधार के है, क्योंकि इस प्रकार के भविष्य के घटनाक्रम का पूर्वानुमान केवल धार्मिक दृष्टिकोण से किया गया है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।**

- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, किसी भी भविष्यवाणी को प्रमाणिकता के साथ सत्यापित किया जाता है, जैसे काल के प्रभाव को या मानव जीवन के अनुभवों को। इसे बिना तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण के स्वीकार नहीं किया जा सकता है।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत का दावा बिना प्रमाण और तात्त्विक आधार के प्रस्तुत किया गया है। यह केवल विश्वास और आस्था पर आधारित है, जिसे तार्किक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।

आयत 83 का अनुवाद:
"और (उस दिन को याद करो) जिस दिन हम हर उम्मत से एक ऐसे गिरोह को जो हमारी आयतों को झुठलाया करते थे (ज़िन्दा करके) जमा करेंगे फिर उन की टोलियाँ अलहदा अलहदा करेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह कहा गया है कि क़यामत के दिन, हर उम्मत से एक गिरोह इकट्ठा किया जाएगा जो कुरआन की आयतों को झुठलाते थे।
- **हेतु (Reason):** यह भी भविष्यवाणी पर आधारित दावा है, जिसमें कोई तात्त्विक या प्रमाणिक आधार नहीं दिया गया है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, भविष्यवाणियों को सत्यापित करने के लिए प्रमाण की आवश्यकता मानी जाती है। इसे केवल विश्वास से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत भी बिना किसी प्रमाणिक और तात्त्विक आधार के एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है। इसे तार्किक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 84 का अनुवाद:
"यहाँ तक कि जब वह सब (ख़ुदा के सामने) आएँगें और ख़ुदा उनसे कहेगा क्या तुम ने हमारी आयतों को बगैर अच्छी तरह समझे बूझे झुठलाया-भला तुम क्या क्या करते थे और चूँकि ये लोग ज़ुल्म किया करते थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
 प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि क़यामत के दिन, लोग ख़ुदा के सामने आएंगे और उनसे सवाल किया जाएगा कि क्या उन्होंने कुरआन की आयतों को बिना समझे झुठलाया।**
- **हेतु (Reason): यह दावा धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसे प्रमाण या तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, तात्त्विक सत्य को केवल प्रमाणों और अनुभवों से जाना जाता है, न कि केवल विश्वास से।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में जो दावा किया गया है, वह धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसका कोई प्रमाणिक या तात्त्विक आधार नहीं है।**

आयत 85 का अनुवाद:
 "इन पर (अज़ाब का) वायदा पूरा हो गया फिर ये लोग कुछ बोल भी तो न सकेंगें।"

चुना गया न्याय तत्व:
 प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि क़यामत के दिन उन लोगों पर अज़ाब का वायदा पूरा होगा और वे कुछ भी नहीं बोल सकेंगे।**
- **हेतु (Reason): यह दावा बिना प्रमाण और तात्त्विक आधार के है। भविष्य में घटने वाली घटनाओं का कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं है, और यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, किसी भी घटना के घटने का निर्णय प्रमाणों और तात्त्विक आधार पर ही लिया जाता है। इसे केवल धार्मिक विश्वासों से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत भी बिना किसी प्रमाण और तात्त्विक आधार के प्रस्तुत की गई है। यह केवल विश्वास पर आधारित है, जिसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
81	**प्रमाण (Pramana)**	**यह दावा केवल विश्वास पर आधारित है, और इसका कोई तात्त्विक आधार नहीं है।**
82	**प्रमेय (Prameya)**	**क़यामत के दिन होने वाली घटनाओं का दावा बिना प्रमाण और तात्त्विक आधार के प्रस्तुत किया गया है।**
83	**प्रमेय (Prameya)**	**भविष्यवाणियों का कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं है, और यह विश्वास पर आधारित है।**
84	**प्रमाण (Pramana)**	**क़यामत के दिन होने वाली घटनाओं का दावा बिना प्रमाण और तात्त्विक आधार के प्रस्तुत किया गया है।**
85	**प्रमेय (Prameya)**	**यह दावा भी बिना तात्त्विक आधार के प्रस्तुत किया गया है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में किए गए अधिकांश दावे धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं, और इनमें कोई ठोस तात्त्विक या प्रमाणिक आधार नहीं दिया गया है। यह दावा केवल विश्वास और आस्थाओं पर निर्भर है, जिसे तात्त्विक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयतों 81 से 85 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 81 का अनुवाद:
"और न तुम अँधें को उनकी गुमराही से राह पर ला सकते हो तुम तो बस उन्हीं लोगों को (अपनी बात) सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर इमान रखते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि आप (रसूल) केवल उन्हीं लोगों को अपनी बात सुना सकते हैं जो कुरआन पर विश्वास रखते हैं, और अंधों (गुमराह लोगों) को रास्ता नहीं दिखा सकते।**

- **हेतु (Reason): यह विचार धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें यह माना गया है कि केवल विश्वास रखने वाले ही सही मार्गदर्शन को स्वीकार करते हैं। यह दावा तात्त्विक और प्रमाणिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से वेदांत और योग में, व्यक्ति की आत्मा (आत्मज्ञान) से जुड़ी कोई भी गुमराही या भ्रम केवल सही ज्ञान और तात्त्विक प्रमाणों से हटाया जा सकता है, न कि केवल विश्वास से।**

- **निगमन (Conclusion): इस आयत का दावा विश्वास पर आधारित है और इसका तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है। इस प्रकार, यह दावा तार्किक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।**

आयत 82 का अनुवाद:
"फिर वही लोग तो मानने वाले भी हैं जब उन लोगों पर (क़यामत का) वायदा पूरा होगा तो हम उनके वास्ते ज़मीन से एक चलने वाला निकाल खड़ा करेंगे जो उनसे ये बाते करेंगा कि (फलां फलां) लोग हमारी आयतो का यक़ीन नहीं रखते थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह कहा गया है कि क़यामत के दिन एक चलने वाला निकाला जाएगा जो उन लोगों से बात करेगा जिन्होंने कुरआन को नहीं माना।
- **हेतु (Reason):** यह विचार बिना प्रमाण और तात्त्विक आधार के है, क्योंकि इस प्रकार के भविष्य के घटनाक्रम का पूर्वानुमान केवल धार्मिक दृष्टिकोण से किया गया है, जो तात्त्विक दृष्टिकोण से सिद्ध नहीं किया जा सकता।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, किसी भी भविष्यवाणी को प्रमाणिकता के साथ सत्यापित किया जाता है, जैसे काल के प्रभाव को या मानव जीवन के अनुभवों को। इसे बिना तात्त्विक या वैज्ञानिक प्रमाण के स्वीकार नहीं किया जा सकता है।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत का दावा बिना प्रमाण और तात्त्विक आधार के प्रस्तुत किया गया है। यह केवल विश्वास और आस्था पर आधारित है, जिसे तार्किक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।

आयत 83 का अनुवाद:
"और (उस दिन को याद करो) जिस दिन हम हर उम्मत से एक ऐसे गिरोह को जो हमारी आयतों को झुठलाया करते थे (ज़िन्दा करके) जमा करेंगे फिर उन की टोलियाँ अलहदा अलहदा करेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह कहा गया है कि क़यामत के दिन, हर उम्मत से एक गिरोह इकट्ठा किया जाएगा जो कुरआन की आयतों को झुठलाते थे।
- **हेतु (Reason):** यह भी भविष्यवाणी पर आधारित दावा है, जिसमें कोई तात्त्विक या प्रमाणिक आधार नहीं दिया गया है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, भविष्यवाणियों को सत्यापित करने के लिए प्रमाण की आवश्यकता मानी जाती है। इसे केवल विश्वास से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

- **निगमन (Conclusion):** यह आयत भी बिना किसी प्रमाणिक और तात्त्विक आधार के एक धार्मिक विश्वास पर आधारित है। इसे तार्किक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 84 का अनुवाद:
"यहाँ तक कि जब वह सब (ख़ुदा के सामने) आएँगें और ख़ुदा उनसे कहेगा क्या तुम ने हमारी आयतों को बगैर अच्छी तरह समझे बूझे झुठलाया-भला तुम क्या क्या करते थे और चूँकि ये लोग ज़ुल्म किया करते थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह कहा गया है कि क़यामत के दिन, लोग ख़ुदा के सामने आएंगे और उनसे सवाल किया जाएगा कि क्या उन्होंने कुरआन की आयतों को बिना समझे झुठलाया।
- **हेतु (Reason):** यह दावा धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसे प्रमाण या तात्त्विक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, तात्त्विक सत्य को केवल प्रमाणों और अनुभवों से जाना जाता है, न कि केवल विश्वास से।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में जो दावा किया गया है, वह धार्मिक विश्वास पर आधारित है, और इसका कोई प्रमाणिक या तात्त्विक आधार नहीं है।

आयत 85 का अनुवाद:
"इन पर (अज़ाब का) वायदा पूरा हो गया फिर ये लोग कुछ बोल भी तो न सकेंगें।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि क़यामत के दिन उन लोगों पर अज़ाब का वायदा पूरा होगा और वे कुछ भी नहीं बोल सकेंगे।**
- **हेतु (Reason): यह दावा बिना प्रमाण और तात्त्विक आधार के है। भविष्य में घटने वाली घटनाओं का कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं है, और यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, किसी भी घटना के घटने का निर्णय प्रमाणों और तात्त्विक आधार पर ही लिया जाता है। इसे केवल धार्मिक विश्वासों से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत भी बिना किसी प्रमाण और तात्त्विक आधार के प्रस्तुत की गई है। यह केवल विश्वास पर आधारित है, जिसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
81	प्रमाण (Pramana)	यह दावा केवल विश्वास पर आधारित है, और इसका कोई तात्त्विक आधार नहीं है।
82	प्रमेय (Prameya)	क़यामत के दिन होने वाली घटनाओं का दावा बिना प्रमाण और तात्त्विक आधार के प्रस्तुत किया गया है।
83	प्रमेय (Prameya)	भविष्यवाणियों का कोई तात्त्विक प्रमाण नहीं है, और यह विश्वास पर आधारित है।
84	प्रमाण (Pramana)	क़यामत के दिन होने वाली घटनाओं का दावा बिना प्रमाण और तात्त्विक आधार के प्रस्तुत किया गया है।
85	प्रमेय (Prameya)	यह दावा भी बिना तात्त्विक आधार के प्रस्तुत किया गया है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में किए गए अधिकांश दावे धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं, और इनमें कोई ठोस तात्त्विक या प्रमाणिक आधार नहीं दिया गया है। यह दावा केवल विश्वास और आस्थाओं पर निर्भर है, जिसे तात्त्विक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

आयत 91 से 93 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 91 का अनुवाद:
"(ऐ रसूल उनसे कह दो कि) मुझे तो बस यही हुक्म दिया गया है कि मैं इस शहर (मक्का) के मालिक की इबादत करूँ जिसने उसे इज़्ज़त व हुरमत दी है और हर चीज़ उसकी है और मुझे ये हुक्म दिया गया कि मैं (उसके) फरमाबरदार बन्दों में से हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कहा गया है कि पैग़म्बर को इस शहर (मक्का) के मालिक की इबादत करने का हुक्म दिया गया है, जिसने उसे इज़्ज़त दी है, और हर चीज़ उसी की है।**
- **हेतु (Reason): यह दावा एक विशेष स्थान (मक्का) और उस स्थान के मालिक की पूजा की ओर संकेत करता है। यह धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो प्राकृतिक और भौतिक दृष्टिकोण से स्पष्ट नहीं किया जा सकता है। मक्का का ऐतिहासिक और भौतिक महत्व है, लेकिन इस आयत में इसे धार्मिक दृष्टिकोण से विशिष्ट किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, पूजा और धार्मिक कार्यों को व्यक्तिगत और सामाजिक संदर्भ में देखा जाता है, और विशेष स्थानों को एक दिव्य सत्ता से जोड़ने का विचार व्यक्ति के विश्वासों पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, भारतीय देवस्थलों और तीर्थ स्थलों का महत्व सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से है, जो एक भौतिक स्थान के साथ जोड़ा जाता है, लेकिन इसका तात्त्विक आधार नहीं होता।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत विशेष स्थानों और सत्ता से जुड़े धार्मिक विश्वासों को व्यक्त करती है, जिनका तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं है। यह धार्मिक आस्थाओं का परिणाम है।**

आयत 92 का अनुवाद:
"और ये कि मैं क़ुरआन पढ़ा करूँ फिर जो शख़्स राह पर आया तो अपनी ज़ात के नफ़े के वास्ते राह पर आया और जो गुमराह हुआ तो तुम कह दो कि मैं भी एक डराने वाला हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कहा गया है कि पैग़म्बर को क़ुरआन पढ़ने का आदेश दिया गया, और जो सही मार्ग पर आया वह अपने स्वयं के फायदे के लिए आया, जबकि जो गुमराह हुआ उसे यह बताया गया कि पैग़म्बर केवल एक डराने वाला है।**

- **हेतु (Reason): यह दावा है कि क़ुरआन का उद्देश्य लोगों को मार्गदर्शन देना है, लेकिन यह भी कहा गया है कि अगर कोई गुमराह हो जाता है तो यह एक अलर्ट के रूप में है। यहाँ पर सही मार्गदर्शन का आधार क़ुरआन है, जो धार्मिक दृष्टिकोण से माना जाता है, लेकिन इसका तात्त्विक प्रमाण नहीं दिया गया है।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, मार्गदर्शन का विचार विशेष रूप से ज्ञान और आचरण से जुड़ा होता है। व्यक्ति को अपने अच्छे कार्यों के लिए ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, न कि किसी बाहरी डर से प्रेरित होना चाहिए। उदाहरण के तौर पर, भगवद गीता में अर्जुन को ज्ञान और योग द्वारा सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी गई थी।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत धार्मिक दृष्टिकोण से मार्गदर्शन देने की बात करती है, लेकिन इसका तात्त्विक प्रमाण नहीं है। यह एक विश्वास है कि सही मार्ग पर आना क़ुरआन के अध्ययन और इसके आदेशों का पालन करने से ही संभव है।**

आयत 93 का अनुवाद:
"और तुम कह दो कि अल्हमदोलिल्लाह वह अनक़रीब तुम्हें (अपनी कुदरत की) निशानियाँ दिखा देगा तो तुम उन्हें पहचान लोगे और जो कुछ तुम करते हो तुम्हारा परवरदिगार उससे ग़ाफिल नहीं है।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कहा गया है कि अल्लाह अपनी कुदरत की निशानियाँ दिखाएगा, जिन्हें लोग पहचानेंगे, और जो कुछ वे करते हैं, उस पर उनका परवरदिगार ग़ाफिल नहीं है।**
- **हेतु (Reason): यह दावा भविष्यवाणी पर आधारित है कि अल्लाह अपनी कुदरत की निशानियाँ दिखाएगा, जिनसे लोग उसे पहचान सकेंगे। यह तात्त्विक रूप से सिद्ध नहीं किया जा सकता है क्योंकि यह भविष्य की घटनाओं की बात करता है, जिन्हें केवल धार्मिक आस्थाओं के आधार पर स्वीकार किया जाता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, आत्म-ज्ञान और ब्रह्मा की शक्ति को अनुभव के माध्यम से ही समझा जा सकता है। उदाहरण के रूप में, योग और ध्यान के माध्यम से व्यक्ति ब्रह्म की कुदरत का अनुभव करता है, लेकिन यह एक व्यक्तिगत और आध्यात्मिक अनुभव होता है, जिसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत का दावा भविष्यवाणी और धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, जिसमें कोई तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं दिया गया है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
91	हेतु (Reason)	यह आयत धार्मिक आस्थाओं पर आधारित है, और इसका तात्त्विक आधार नहीं दिया गया है।

92	**प्रमाण (Pramana)**	**यह दावा धार्मिक मार्गदर्शन का है, लेकिन इसका तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार नहीं है।**
93	**प्रमेय (Prameya)**	**यह भविष्यवाणी और धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, जिसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत दावे और विचार धार्मिक आस्थाओं और विश्वासों पर आधारित हैं, जिनका तात्त्विक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कोई प्रमाण नहीं है। यह धार्मिक मार्गदर्शन और भविष्यवाणियाँ हैं, जो केवल विश्वास और आस्थाओं पर निर्भर करती हैं, और इन्हें तात्त्विक या वैज्ञानिक आधार से सिद्ध नहीं किया जा सकता है।